पलटू साहिब की बानी

॥ दूसरा भाग ॥

चुने हुए अति मनोहर

रेख़ते, झूलने, अरिल छंद, कबित्त और सवैये

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

सन् १९५४ ई०

मूल्य १)

Printed and Published
at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By B. Sajjan.

छठवें छापे की प्रस्तावना

सन् १९०७ ईसवी में हमने एक लिपि से पलटू साहिब की कुंडलियाँ थोड़े से अरिल छंद इत्यादि के साथ छापी थीं और फिर कुछ रेख्ते, झूलने और भजन मिले जिन्हें एक छोटी सी पुस्तक के रूप में सन् १६०८ में छापा परन्तु इन पदों की दूसरी लिपि न मिलने के कारन उनके मुकाबला और भली भाँति जाँच करने का मौका न मिला अपनी अल्प बुद्धि अनुसार दो पलटूपथी साधुओं से जहाँ तहाँ पूछ कर छाप दिया। हाल में बाबा सरजूदास जी पलटूपंथी, पुराना कोपा जिला आजमगढ़ के महन्त से भेंट हुई और इन परोपकारी महात्मा ने कृपा करके हमको अपनी हस्त-लिखित पुस्तक पलटू साहिब की बानी की दी जिससे मिलान करके त्रुटियाँ जो पहले छापे में रह गई थीं ठीक की गई और बहुत सी नई मनोहर कुंडलियाँ, रेख्ते, झूलने, अरिल छद, कबित्त, सवैये और भजन के पद चुनने का भी अवसर मिला। यह सब पहिले छपे हुए पदों के साथ नये सिर से तीन भागों में इस क्रम से छापे जाते हैं :—

भाग १—कुंडलियाँ।

भाग २—रेख्ता, झूलना, अरिल, कबित्त और सवैया।

भाग ३—रागों के शब्द या भजन, और साखियाँ जो ठाकुर गंगाबख्श सिंह जमींदार मौजा टँडवा जिला फैजाबाद ने कृपा करके भेजीं।

इस सहायता के लिये हम महंत सरजूदासजी को मुख्य कर और ठाकुर गंगाबख्श सिंह जी को हृदय से धन्यवाद देते हैं। महंतों में हमको आज तक ऐसे कोई नहीं मिले थे जिन्होंने आप अपने पंथ के प्रचारक महात्मा का ग्रंथ स्वच्छ परोपकार के निमित्त बड़े उत्साह से छापने को दिया हो।

इलाहाबाद
सन् १९५४

अधम
एडिटर संतबानी-पुस्तक माल

जीवन चरित्र।

महात्मा पलटूदास जी (पलटू साहिब) के जीवन-चरित्र के हम बहुत दिन से खोज में हैं परन्तु कहीं से पूरा हाल आज तक नहीं मिला यद्यपि कितने ही ग्रन्थ देखे गये और देश देशान्तर के साधुओं, विद्वानों और निज पलटूपथी महन्तों से दरियाफ्त किया गया। पलटूदासजी के सगे भाई और परम भक्त पलटूप्रसाद ने (जिनका संसारी नाम कुछ और ही था) अपनी 'भजनावली" नामक पुस्तक मे थोड़ा सा हाल लिखा है जिससे निश्चय होता है कि पलटू साहिब ने नगपुरजलालपुर गाँव में एक काँदू बनिया के कुल में जन्म लिया जिसे "भजनावली" मे नंगाजलालपुर के नाम से लिखा है। यह गाँव फैजाबाद के जिले में आजमगढ़ की पच्छिम सीमा से मिला हुआ है, नंगाजलालपुर नाम का कोई गाँव आजमगढ़ या फैजाबाद के जिले में नहीं है। यहीं उनके पुरोहित गोविंदजी महाराज रहते थे और दोनों न बाबा जानकीदास नामक साधू से उपदेश लिया था, पर उनकी शांति नहीं हुई इस लिए सार वस्तु की खोज में दोनों निकले। गोविंदजी जगन्नाथपुरी को जाते थे कि रास्ते में

भीखा साहिब के दर्शन मिले जिनसे गुप्त भेद प्राप्त हुआ। तब गोविंदजी पलटू साहिब के पास लौटकर आये और पलटूसाहिब ने उनसे सार वस्तु का उपदेश लेकर उन्हें गुरु धारण किया।

भजनावली के तीन दोहे यहाँ लिखे जाते हैं :—

नंगाजलालपुर जन्म भयो है, बसे अवध के खोर।
कहैं पलटूप्रसाद हो, भयो जक्त में सोर॥
चार बरन को मेटि के, भक्ति चलाई मूल।
गुरु गोविंद के बाग में, पलटू फूले फूल॥
सहर जलालपुर मूड़ मुड़ाया, अवध तुड़ा करधनियाँ।
सहज करैं ब्योपार घट में, पलटू निर्गुन बनियाँ॥

पलटू साहिब उन्नीसवें शतक विक्रमीय में वर्त्तमान थे—अवध के नवाब शुजाउद्दौला और हिन्दुस्तान के बादशाह शाह आलम इनके समकालीन थे जिनको हुए डेढ़ सौ बरस का जमाना बीता। यह महात्मा सदा गृहस्थ आश्रम में रहे और इनके वंश के लोग अब तक नगपुरजलालपुर के गाँव में मौजूद हैं।

पलटू साहिब बहुत काल तक फैजाबाद के अयोध्या नगर में विराजमान थे जहाँ उन्होंने अपना सतसंग खड़ा किया और अपने उपदेश से अनेक जीवों को चिताया। इसी स्थान पर उन्होंने शरीर त्याग किया और वहाँ उनकी समाधि और संगत अब तक मौजूद हैं। और जगहों में भी इन महात्मा के अनुयाइयों की संगत हैं और पलटूपंथी साधू और गृहस्थ तो थोड़े बहुत भारतवर्ष के हर विभाग में पाये जाते हैं।

पलटू साहिब की प्रचंड महिमा और कीर्ति को देख कर अयोध्या और आस पास के अखाड़ों के बैरागियों के चित्त में बड़ी जलन और ईर्षा पैदा हुई जिसका इशारा पलटू साहिब ने अपनी बानी में भी जगह जगह पर किया है। कहते हैं कि यह ईर्षा इतनी बढ़ी कि इन दुष्टों ने गुट करके पलटू साहब को जीते जी जला दिया परन्तु उसी समय और उसी देह से वह फिर जगन्नाथपुरी में प्रगट हुए और तत्काल ही फिर गुप्त हो गये। इसके प्रमाण में यह साखी दी हुई है :—

अवधपुरी में जरि मुए दुष्टन दिया जराय।
जगन्नाथ की गोद में पलटू सूते जाइ॥

इनके बहुत से चमत्कार और मोजजे मुर्दों के जिलाने इत्यादि के प्रसिद्ध हैं जिनके यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

फरवरी १९५४ }

अधम
एडिटर, संतबानी-पुस्तक माला।

सूची रेख़तों की

सूची झूलनों की

सूची अरिल छंदों की

सूची कवित्तों की

सूची सवैयों की

पलटू साहिब

भाग २

रेख़ता

॥ गुरुदेव ॥

भव सिंधु के पार जो चाहिये जान को,
केवट भेदी तलास कीजै।
घाट औ बाट के भेद का महरमी[1],
उसी की नाव पर पाँव दीजै॥
सबद की नाव पर चढ़ै जो ध्याय कै,
जाय वहि पार नहिँ पाँव भीँजै।
दास पलटू कहै कौन मल्लाह है,
पार भव सिंधु तब उतरि लीजै॥१॥

गुरू पूरा मिलै ज्ञान साधन करै,
पकरि कै पाँच पच्चीस मारै।
आतमा देव है पिंड का थोहरा,
काम औ क्रोध बिनु आग जारै॥
चंद औ सूर तहँ कोटि तारा उगै,
प्रान बायू सेती तत्त मारै॥
गगन के बीच में तेल बाती बिना,
दास पलटू महा दीप बारै॥२॥

---

(१) जानकार।

गुरू तो कीजिये बूझि बिचारि कै,
करम अरु भरम से रहत न्यारा।
करम को बंद जम काल को फंद है,
पचि मरे गुरु सिष्य दोउ सीस धारा॥
धनी को भेद लै बस्तु खोवै नहीँ,
रैन बिनु दीप के महल सारा।
पाँच पचीस को पकरि सठ कैद में,
लाय गुन तीन निःतत्त[१] मारा॥
बिबेक जानै नहीँ कान फूँकत फिरै,
बिना सत सबद किन काल टारा।
दास पलटू कहै सदा वह पाक है,
गुरू तौ वही जिन तत्त गारा[२] ॥३॥

माया कर जोरि कै भई आगे खड़ी,
हुकुम जो होय मैं रहौं स्वामी।
हुकुम जो होय सो करौं तैयार मैं,
हुकुम में तनिक ना करौं खामी[३] ॥
मुक्ति मोरि कीजिये राखिये सरन में,
तनिक जबान से भरौ हामी।
दास पलटू कहै फरक तू खड़ी हो,
बकसु भैने कहै लगै मामी ॥४॥

॥ नाम ॥

पीवता नाम सो जुगन जुग जीवता,
नाहिँ वो मरै जो नाम पीवै।
काल व्यापै नहीँ अमर वह होयगा,
आदि औ अंत वह सदा जीवै॥

(१) जो सार वस्तु नहीं है। (२) सार निकाल लिया। (३) कचाई, चूक।

संत जन अमर हैं उसी हरि नाम से,
उसी हरि नाम पर चित्त देवै ।
दास पलटू कहै सुधा रस छोड़ि कै,
भया अज्ञान तू छाछ लेवै ॥५॥

राखु परवाह तू एक निज नाम की,
खलक मैदान में बाँध टाटी ।
मीर उमराव दिन चारि के पाहुना,
छोड़ि घर माहिं दौलत्त हाथी ॥
पकरि ले सबद जिन तोहि पैदा किया,
और सब होइँगे खाक माटी ।
दास पलटू कहै देखु संसार गति,
बिना निज नाम नहिं कोई साथी ॥६॥

बोलु हरि नाम तू छोड़ि दे काम सब,
सहज में मुक्ति होइ जाय तेरी ।
दाम लागै नहीं काम यह बड़ा है,
सदा सतसंग में लाउ फेरी ॥
बिलम ना लाइ कै डारि सिर भार को,
छोड़ि दे आस संसार केरी ।
दास पलटू कहै यही सँग जायगा,
बोलु मुख राम यह अरज मेरी ॥७॥

॥ सामर्थ ॥

कोटि हैं बिस्नु जहँ कोटि सिव खड़े हैं,
कोटि ब्रह्मा तहाँ कथैं बानी ।
कोटि देवी जहाँ खड़ी हैं चेरियाँ,
कोटि फन सहस ना मरम जानी ॥

कोटि आकास पाताल फिरि कोटि हैं,
कोटि ब्रह्मांड सो कोटि ज्ञानी।
दास पलटू कहै बड़े दरबार में,
इंद्र हैं कोटि तहँ भरैं पानी ॥८॥

भक्त के नाथ को जक्त की लाज है,
रहै सब माहिँ कोउ नाहिँ जानै।
मरै सिर पीटि के आपनी भटक से,
संत के बचन को नाहिँ मानै ॥
मोह औ माया से बीच पड़ि गया है,
कर्म के बंध से भर्म आनै।
दास पलटू कहै जीव सब वही है,
बेद बेदांत में खोजि छानै ॥९॥

॥ सर्व व्यापक ॥

पूरब में राम है पच्छिम खुदाय है,
उत्तर औ दक्खिन कहो कौन रहता।
साहिब वह कहाँ है कहाँ फिर नहीं है,
हिन्दू और तुरुक तोफान करता ॥
हिन्दू औ तुरुक मिलि परे हैं खैंचि[१] में,
आपनी बर्ग[२] दोउ दीन बहता।
दास पलटू कहै साहिब सब में रहै,
जुदा ना तनिक मैं साच कहता ॥१०॥

॥ घट मठ ॥

घट औ मठ ब्रह्मंड सब एक है,
भटकि के मरत संसार सारा।

(१) ऐंचा तानी, तरफ़दारी। (२) फिरका।

मृगा की बासना वही छूटै नहीं,
आप को भूलि बहु बार हारा ॥
आपु को खोज तू भर्म को छोड़ि दे,
कोटि बैकुंठ ससि भानु तारा ।
दास पलटू कहै बहुत तहकीक करि,
बोलता ब्रह्म है राम प्यारा ॥११॥

मरै सिर पटकि कै धोख धंधा करै,
जाय तू कहाँ कुछ होस नाहीं ।
बैठु सतसंग में बात को बूझि ले,
बिना सतसंग ना भर्म जाही ॥
सबै है राम का राम का वही है,
दौरि कै राम जब धरै बाहीं[१] ।
दास पलटू कहै जिन्हैं तू खोजता,
सोई तो राम है तुसी पाहीं[२] ॥१२॥

॥ अद्वैत ॥

पवन पानी कँहै अगिन से जोरि कै,
नाइ माटी केरी महल छाया ।
पाँच है तत्त सोइ पाँच भूतात्मा,
इंद्री दस ज्ञान औ कर्म लाया ॥
मन परकिर्ति हंकार फिर जीव है,
महातत्त सोई है ब्रह्म आया ।
दास पलटू कहै दूसरा कौन है,
भर्म को छोड़ि दे द्वैत माया ॥१३॥

(१) यों तो सभी राम के हैं पर निज करके उन का वही है जिस की बाँह को राम दौड़ कर पकड़ें । (२) तेरे निकट ।

एक अनेक अनेक फिर एक है,
एक ही एक ना और कोई।
संत को एक अनेक संसार को,
रहा भरिपूर सब माहिँ सोई॥
संत के अमर है मरै असंत के,
नरक औ सरग यहि भाँति होई।
नरक औ सरग सब होत अनेक को,
दास पलटू हम देखि रोई॥१४॥

॥ संत और साध ॥

धन्य हैँ संत निज धाम सुख छाड़ि कै,
आन के काज को देह धारा।
ज्ञान समसेर लै पैठि संसार मैँ,
सकल संसार का मोह टारा॥
प्रीति सब से करैँ मित्र औ दुष्ट से,
भली अरु बुरी दोउ सीस धारा।
दास पलटू कहै राम नहिँ जानहूँ,
जानहूँ संत जिन जक्त तारा॥१५॥

संत संसार मेँ आय परगट भये,
नाम दृढ़ाय कै जक्त तारा।
भजन भगवान को कोऊ ना जानता,
संत यहि हेतु औतार धारा॥
राम के नाम पर अदल चलाय कै,
काल के सीस पर धौल मारा।
दास पलटू कहै रहे सब डूबते,
संत ने पकरि कै किहा पारा॥१६॥

संत औ राम को एक कै जानिये,
दूसरा भेद ना तनिक आनै।
लाली ज्यों छिपी है मिंहदी के पात में,
दूध में घीव यह ज्ञान ठानै॥
फूल में बास ज्यों काठ में आग है,
संत में राम यहि भाँति जानै।
दास पलटू कहै संत में राम है,
राम में संत यह सत्य मानै॥१७॥

संत दरबार तहसील संतोष की,
कचहरी ज्ञान हरि नाम डंका।
रिद्धि औ सिद्धि दोउ हाथ बाँधे खड़ी,
बिबेक ने मारि कै दिहा धक्का॥
मुक्ति सिर खोलि कै करै फिरियाद को,
दिहा दुदकार यह अदल बंका[1]।
मारि माया कँहे अमल ऐसा किहा,
दास पलटू अहै हरीफ पक्का॥१८॥

सबद बिबेकी मिलै जो आइ कै,
उसहु की सुनै कछु आप कहना।
उसी टकसार का होय तो बोलिये,
बिना टकसार सुनि मौन रहना॥
सत्त की गाय को सुरति से दुहि कै,
दही जमाय के तत्त महना।
दास पलटू कहै आपनी मौज में,
यार फक्कीर तुम खुसी रहना॥१९॥

(१) बाँका।

काच कंचन सेती भेद ना राखही,
दुष्ट औ मित्र को एक जानै।
निंदा अस्तुति सेती पीठ दे बैठही,
भली औ बुरी कछु नाहिं मानै॥
छोड़ जग आस को भरम को बोरि दे,
पाप औ पुन्न इक घाट आनै।
दास पलटू कहै सोई अनन्य है,
कर्म संसार को पकरि भानै॥२०॥

॥ सतसंग ॥

बिना सतसंग ना कथा हरि नाम की,
बिना हरि नाम ना मोह भागै।
मोह भागे बिना मुक्ति ना मिलैगी,
मुक्ति बिनु नाहिँ अनुराग लागै॥
बिना अनुराग से भक्ति ना मिलैगी,
भक्ति बिनु प्रेम उर नाहिँ जागै।
प्रेम बिनु नाम ना नाम बिनु संत ना,
पलटू सतसंग बरदान माँगै॥२१॥

कौन तू सकस है चेत करु आपु को,
कहाँ तू आइ कै मन्न लाया।
केतिक बेर तू गया ठगाय है,
आपना भेद तू नाहिँ पाया॥
भटक यह मिटैगी काम तब होयगा,
केतिक बेर तू भटकि आया।
दास पलटू कहै होय संस्कार जब,
बिना सतसंग ना छुटै माया॥२२॥

गगन मैदान में ध्यान धूनी धरै,
मन में लखि गुरू का ज्ञान छाला।
चंद्र सिर तिलक है तत्त सुमिरन करै,
जपै हरि नाम अवधूत बाला॥
प्रेम भभूति बिवेक की फावड़ी,
गूदरी खुसी अरु आड़ माला।
दास पलटू कहै संत की सरन में,
लिखा नसीब को मेटि डाला॥२३॥

मनै मूरति करै तनै देवल बना,
निकट में छोड़ि कहँ दूरि धावै।
जल पाषान कछु खाय बोलै नहीं,
बिना सतसंग सब भटकि आवै॥
यही तहकीक करु बोलता कौन है,
यही है राम जो नित्त खावै।
दास पलटू कहै बोलता पूजिये,
करै सतसंग तब भेद पावै॥२४॥

॥ चितवानी ॥

देँह और गेह परिवार को देखि कै,
माया के जोर में फिरै फूला।
जानता सदा दिन ऐसे ही जायँगे,
सुंदरी संग सुखपाल भूला॥
चारि जून खात है बैठि के खुसी से,
बहुत मुटाई कै भया थूला।
सेज-बँद[1] बाँधि कै पान को चाभते,
रैन दिन करत है दूध कूला[2]॥

(१) डोरी जिस से बिछौने को पलँग के पायों से बाँध देते है। (२) कुल्ला।

जानता अमर हूँ मरूँगा अब नहीं,
बाघ की रौस[1] जा काल हूला।
दास पलटू कहै नाम को याद करु,
ख्वाब की लहरि में काह भूला ॥२५॥

राम के नाम से भूलना नाहिँ है,
खायगा यार तू फेरि गोता।
काम औ क्रोध में लगा दिन राति तू,
लोभ औ मोह का खेत जोता।
भई जागीर तागीर[2] हजूर से,
काल ने आय के लिहा पोता[3] ॥
दास पलटू कहै पड़ा किस ख्याल में,
घरी पल पहर में कूच होता ॥२६॥

॥ प्रेम ॥

जाहि तन लगी है सोई तन जानिहै,
जानिहै वही सतसंग बासी।
कोटि औषधि करै बिरह ना जायगा,
जाहि के लगी है बिरह गाँसी ॥
नैन झरना बन्यौ भूख ना नींद है,
परी है गले बिच प्रेम फाँसी।
दास पलटू कहै लगी ना छूटिहै,
सकल संसार मिलि करै हाँसी ॥२७॥

गगन में मगन है मगन में लगन है,
लगन के बीच में प्रेम पागै।

---

(१) तरह। (२) तगादा। (३) माल-गुज़ारी।

प्रेम मेँ ज्ञान है ज्ञान मेँ ध्यान है,
ध्यान के धरे से तत्त जागै ॥
तत्त के जगे से लगै हरि नाम मेँ,
पगै हरि नाम सतसंग लागै ।
दास पलटू कहै भक्ति अबिरल मिलै,
रहै निर्संक जब भर्म भागै ॥२८॥

कफ़न को बाँधि कै करै तब आसिकी,
आसिक जब होय तब नाहिँ सोवै ।
चिंता बिनु आगि के जरै दिन राति जब,
जीवत ही जान से सती होवै ॥
भूख पियास जग आस को छोड़ करि,
आपनी आपु से आप खोवै ।
दास पलटू कहै इसक मैदान पर,
देइ जब सीस तब नाहिँ रोवै ॥२९॥

प्रेम की घटा मेँ बुंद परै पटापट,
गरज आकास बरसात होती ।
गगन के बीच मेँ कूप है अधोमुख,
कूप के बीच इक बहै सोती ॥
उठत गुंजार है कुंज की गली मेँ,
फोरि आकास तब चली जोती ।
मानसरोवर मेँ सहसदल कँवल है,
दास पलटू हंस चुगै मोती ॥३०॥

॥ झूलना ॥

होय रजपूत सो चढ़ै मैदान पर,
खेत पर पाँच पचीस मारै।
काम औ क्रोध दुइ दुष्ट ये बड़े हैं,
ज्ञान के धनुष से इन्हैं टारै॥
कूद परि जाइ कै कोट काया महै,
आगि लगाय के मोह जारै।
दास पलटू कहै सोई रजपूत है,
लेहि मन जीति तब आपु हारै॥३१॥

महा दल मोह पर संत जन चढ़े हैं,
फौज बिबेक तैयार कीन्हा।
ज्ञान निस्सान को चढ़े बजाय कै,
हरावल[1] छमा घर घाट चीन्हा॥
भक्ति देवान आचाह पैदर[2] बना,
बिराग असवार से घेर लीन्हा।
दास पलटू कहै मोह दल साफ भा,
तोप संतोष छोड़ाइ दीन्हा॥३२॥

खैंचि समसेर[3] तब पैठु रनसेर[4] में,
करै ना देर सोइ साध बंका[5]।
काम दल जारि कै क्रोध को मारि कै,
रहै निर्सङ्क ना करै संका।
मनराव को पकरि कै ज्ञान से जकरि कै,
छिमा दै ढाल गढ़ लेत लंका।
पलटू सोई दास कँह सुन्न में बास तब,
गैब घर बैठि के देत डंका॥३३॥

(१) पहरेदार जो फौज के आगे रहते हैं। (२) सिपाही। (३) तलवार। (४) लड़ाई का मैदान। (५) बाँका।

ज्ञान दल छोहनी भालु बानर लिहे,
चढ़ा है छिमागढ़ जाय लंका।
प्रेम हनुमंत जब चला है गरजि कै,
दिहा गढ़ लाय बजाय डंका।
मोह समुद्र को बाँधि बिबेक से,
उतरि गइ फौज ना तनिक संका॥
हंकार सुनि रावना भागु ना बचैगा,
दास पलटू सँग बीर बंका॥३४॥

राज तन में करै भक्ति जागीर लै,
ज्ञान से लरै रजपूत सोई।
छमा तलवार से जगत को बसि करै,
प्रेम की जुज्झ[1] मैदान होई॥
लोभ औ मोह हंकार दल मारि कै,
काम औ क्रोध ना बचै कोई।
दास पलटू कहै तिलकधारी[2] सोई,
उदित तिहु लोक रजपूत सोई॥३५॥

गुरू के भेद को पाइ कै सिकिलि करु,
उसी के सबद में गरक रहना।
ज्ञान का ढोल बजाय चौगान में,
कफन को बाँधि मैदान चढ़ना॥
आपने ख्याल में मगन दिन राति रहु,
जगत के भरम को दूरि करना।
दास पलटू कहै मुक्ति होइ जायगी,
गुरू के इसिम पर ठौर मरना[3]॥३६॥

(१) लड़ाई। (२) ऐसा प्रतापी राजा जो तिलक देकर औरों को राजा बना सकता है। (३) गुरू के नाम पर जान दे देना।

सच्च को जीन संतोष लगाम है,
गुरु ज्ञान को पाखर जाय डारा।
बिस्वास रकाब में जुगति की एड़ दै,
पाँच पच्चीस मवास मारा॥
पवन का घोड़ा सुरति असवार है,
प्रेम की ढाल है मर्म भाला।
बिबेक देवान इन्साफ पर बैठि कै,
मुक्ति को कैद जंजीर डाला॥३७॥

ज्ञान समाज में जाय बैठे जबै,
कामदेव जाय तरवार झारी।
माया मोह का घोड़ा दौड़ावता,
संग लिये फौज मृग-नैनि नारी॥
वो तो भागि के दसवें द्वार लुका,
रिसियाय के हम ने तान मारी।
पलटू जब ज्ञान समसेर खैंची,
तब कामदेव की फौज हारी॥३८॥

॥ संतोष ॥

गुरू जो दिया है सोई तू लिये रहु,
उसी में बहुत बिस्वास करना।
होयगा बहुत फिरि सबद जो लगैगा,
चित्त को चेति कै ध्यान धरना॥
चतुर जो होयगा करैगा कसब[1] को,
बुंद ही बुंद सामुद्र भरना।
दास पलटू कहै सिफत है सुरति की,
और कोइ ख्याल में नाहिं परना॥३६॥

(१) अभ्यास।

संतोष के धरे से खाय गज पेट भरि,
स्वान इक टूक को केतिक धावै।
संत की वृत्ति अजदहा[1] की चाहिये,
चले बिनु फिरे आहार पावै॥
सिंह आहार को करत है सहज में,
स्यार दस बीस घर मूड़ नावै।
दास पलटू कहै और कछु ना करै,
भक्ति कै मूल संतोष लावै॥४०॥

॥ ध्यान ॥

दृष्टि कच्छप[2] के री ध्यान जो लाइये,
अंडा सुरति से सेइ आवै।
तार मकरी गहे उतरि कै आवती,
उलटि के तार गहि फेरि जावै॥
चेटुका[3] गिरा ज्यों अलल के पच्छ का,
जमा पर बीच में उलटि धावै।
दास पलटू कहै भृङ्गी ज्यों कीट को,
देत जियाइ त्यों चित्त लावै॥४१॥

॥ उपदेश ॥

आतम सोई उपाधि का मूल है,
काम औ क्रोध फल फूल लागा।
लोभ औ मोह बहु भाँति साखा चली,
डार औ पात उठि कर्म जागा।
संजम कुल्हारी से पेड़ को काटि कै,
डार औ पात सब सूखि जागा।

(१) अजगर। (२) कछुवा। (३) बच्चा।

दास पलटू कहै मूल ना सींचिये,
बिना जल दिहे सब रोग भागा ॥४२॥

एक ही फाँस में बझे तिहुँ लोक सब,
बझे तिहुँ लोक इक संत छूटे।
एक ही रास्ता कर्म का बड़ा है,
गये उस राह सो सभै लूटे॥
राह झाड़ी मँहै प्रेम के औघटे,
गये बचि संत नहिँ रोम टूटे।
दास पलटू कहै संत की राह तजि,
कर्म की राह गे कर्म फूटे ॥४३॥

छोड़ि बेकाम को काम करु आपना,
गफलत माँहै दिन जात बीता।
धोख धन्धा करै मरै सिर पटकि कै,
राम के नाम से रहा रीता॥
ब्याज बट्टा मँहै लगा दिन रात तूँ,
चला तन हारि ब्योहार जीता।
दास पलटू कहै याद करु याद करु,
बोल बे बालके राम सीता ॥४४॥

पुन्न जो करै सो पुन्न को पाइहै,
पुन्न भे छिन्न मृत लोक आवै।
करम को जीव सो सदा करमै मँहै,
जनम औ मरन फिरि करम पावै॥
पड़ा वह रहै चौरासी के फेर में,
चौरासी को छोड़ि वह कहाँ जावै।

दास पलटू कहै द्वार दसएँ केरी,
राह में जाय सो मुक्ति पावै ॥४५॥

दास कहाइ कै आस न कीजिये,
आस जो करै सो दास नाहीं,।
प्रेम तो एक जो लगा संसार में,
भक्ति गइ दूरि अब जक्त माहीं ॥
चाहिये भक्ति को जक्त से तोरिये,
जोरिये जक्त से भक्ति जाही।
दास पलटू कहै एक को छोड़ि दे,
तरवार दुइ म्यान इक नाहिं चाही ॥४६॥

गाय बजाय के काल को काटना,
और की सुनै कछु आप कहना।
हँसना खेलना बात मीठी कहै,
सकल संसार को बसि करना ॥
खाइये पीजिये मिलै सो पहिरिये,
संग्रह त्याग में नाहिं परना।
बोलु हरि भजन को मगन है प्रेम से,
चुप्प जब रहौ तब ध्यान धरना ॥
भेष भगवंत के चरन को ध्याइ कै,
ज्ञान की बात से नाहिं टरना।
मिलै लुटाइये तुरत कछु खाइये,
माया औ मोह को ठौर मरना ॥
दुक्ख औ सुक्ख फिरि दुष्ट औ मित्र को,
एक सम दृष्टि इक भाव भरना।

दास पलटू कहै राम कहु बालके,
राम कहु राम कहु सहज तरना ॥४७॥

तन मन धन सब आनि आगे धरै,
तेहू को नाहिँ इतबार कीजै।
ज्ञानी औ चतुर को सबद ना दीजिये,
माया के जीव से सबद छीजै॥
जहाँ गौं मिला फिर उलटि फिरि जायगा,
प्रीति कितनो करै परखि लीजै।
दास पलटू कहै प्रेमी जो सबद का,
तेहू को परखि कै सबद दीजै ॥४८॥

होहु सिष बालके काम करु बूझि कै,
कुबुधि को देखि कै दूरि भागौ।
बात है काम की बुरा ना मानिये,
कनक औ कामिनी दूरि त्यागौ॥
प्रीति ना कीजिये मोह में परहुगे,
छोड़ि कुसंग सतसंग लागौ।
दास पलटू कहै कर्म को मेटि कै,
सीस पर सबद कै दाग दागौ ॥४९॥

कूद बे बालके कहर दरियाव में,
जीव की लालचै छोड़ु भाई।
ताकना नाहिँ अब स्यार से सिंह है,
गुरू के चरन में चित्त लाई॥
आखिर धौं मरैगा कूद झड़ाक से,
कूदने सेती ना गम्य खाई[1]।

(१) देर करना।

तुझे क्या लाज है लाज है उसी को,
उसी के सीस दे भार नाई ॥
भार ना बाँकिहै छोड़ डगमगी को,
तनिक बिस्वास करु एक राई[1] ।
दास पलटू कहै कहर की लहर से,
बचैगा सोई जो कूदि जाई ॥५०॥

काछ जो काछिये नाच सोइ नाचिये,
काछ बिनु नाच ना तनिक भावै ।
बाना है सिंह को चाल है सियार की,
रहा वह स्यार नहिं चाल पावै ॥
भेष धरे हंस सूभाव है काग को,
हंस जब होय सूभाव जावै ।
दास पलटू कहै काछ तो नाचि ले,
कथनी रहनी इक घाट आवै ॥५१॥

नाचना नाचु तो खोलि घूँघट कँहै,
खोलि के नाचु संसार देखै ।
खसम रिझाव तो ओट को छोड़ि दे,
भर्म संसार को दूरि फेकै ॥
लाज किसकी करै खसम से काम है,
नाचु भरि पेट फिर कौन छेकै ।
दास पलटू कहै तुहीँ सोहागिनी,
सोव सुख सेज तू खसम एकै ॥५२॥

सुन्दरी पिया की पिया को खोजती,
भई बेहोस तू पिया के कै ।

---

(१) राई भर ।

बहुत सी पद्मिनी खोजती मरि गईं,
रटत ही पिया पिया एक एकै ॥
सती सब होत हैं जरत बिनु आगि से,
कठिन कठोर वह नाहिँ झाँकै।
दास पलटू कहै सीस उतारि कै,
सीस पर नाचु जो पिया ताकै ॥५३॥

जक्त के नाथ की जागती कला है,
रहै सब माहिँ कोइ नाहिँ जानै।
मरै सिर पटकि कै भटक से आपनी,
संत के बचन को नाहिँ मानै ॥
मोह औ मया से बीच परि गया है,
करम के बंध से भरम आनै[1]।
दास पलटू कहै जीव सब वही[2] है,
बेद बेदांत में खोजि छानै ॥५४॥

मुद्रा को पाइ कै करम को त्यागिये,
बिना मुद्रा नहीँ करम त्यागै।
बस्तु को पाइ संसार तब छोड़िये,
गये दोउ दिसा से भीख माँगै ॥
करम निःकरम यह दोऊ मति सार है,
बीच मँहि बहै तो कहाँ लागै।
दास पलटू कहै दोऊ को बूझि कै,
मरद जो होइ सो निकरि भागै ॥५५॥

सुरति ताना करै पवन भरनी भरै,
माँड़ी प्रेम अँग अंग भीनै।

(१) लावै। (२) जीव ब्रह्म ही है।

तत्तु फुलाय कै ज्ञान का कूच[1] लै,
गुढ़ी[2] छुटि जाय तब रहै झीनै ॥
सुषमना राछ बैराग लपेटना,
सबद ढरकी चलै नाहिँ छीनै।
तन करगह करै नरी तुरिया भरै,
दास पलटू सिरी साफ बीनै ॥५६॥

तेल का कसब[3] तमोली जो सीखैगा,
तेल से पान को दूरि त्यागै।
निरगुनी सरगुनी कसब दुइ जगत मेँ,
आपने कसब में दोऊ जागै॥
बूझना नाहिँ है और के कसब को,
और के कसब से दूरि भागै।
दास पलटू कहै कसब करु आपना,
और के कसब मेँ आगि लागै ॥५७॥

॥ उपदेश भेप को ॥

गुरू का सबद दोउ कान मेँ मुद्रिका,
उनमुनी तिलक सिर तत्त ताखी।
प्रेम का चोलना सत्त सेल्ही बनी,
मान को मर्दि कै करै खाखी[4] ॥
संतोष खुराक बिबेक की फावड़ी,
हरि नाम के अमल को रहै चाखी।
दास पलटू कहै होय बिज्ञान जब,
बेद कुरान सब भरैँ साखी ॥५८॥

(१) कूँचा। (२) गुरची या ऐँठन जो सूत मे जो गाँठ सी पड़ आती है। (३) [illegible]। (४) मिट्टी।

यार फकीर तू परा किस ख्याल में,
पाँच पचीस सँग तीस नारी।
एक तुम छोड़िया तीस ठो संग में,
होत अस ज्ञान से नर्क भारी॥
तीस के कारने भीख तू माँगता,
एक ने कवन तकसीर पारी।
दास पलटू कहै खेल यह ना बदो,
छुटै जब तीस तो छोड़ प्यारी॥५६॥

संसार सुख छोड़ि कै भया फकीर तू,
भया फकीर क्या स्वाद पाया।
पेट छूटा नहीं भीख क्या माँगता,
पाँच पचीस सँग लगी माया।
दारा एक तुम तजी घर बीच में,
पाँच पचीस को संग लाया।
दास पलटू कहै क्या नफा तोहि मिला,
राम का नाम जो नाहिं आया॥६०॥

यार फकीर तू बाँधु फाका कँहै,
करो संतोष यह अर्ज मेरी।
रहो बेफिकर ह्वै बाँधि कफनी कँहै,
पहिरि के बैठु जा प्रेम बेरी॥
करो फराख दिल फहम टुक कीजिये,
फरक संसार से पीठ फेरी।
दास पलटू कहै फक्कर फारिग हुआ,
फटी हजूर में फरद तेरी॥६१॥

फकीर के बालके गुसा ना कीजिये,
गुसा फकीर को नाहिँ अच्छा ।
बात मीठी कहो नीक सब को लगै,
भेष भगवंत की पकरि पच्छा ॥
रहनि ऐसी रहो बहुत गरीब ह्वै,
सकल संसार मिलि करै रच्छा ।
दास पलटू कहै बहुत चुचुकारि कै,
बचन को मानि अब लेहु बच्चा ॥६२॥

यार फकीर फकीरी जो कीजिये,
किसी की नाहिँ परवाह करना ।
साहिब का होइ अब होयगा कौन का,
उसी के नाम पर ठौर मरना ॥
परवाह इक उसी की जिसी का भया तू,
उसी के द्वार से नाहिँ टरना ।
दास पलटू कहै मजा जब मिलैगा,
हाजिर हजूर संतोष धरना ॥६३॥

॥ ज्ञान ॥

ज्ञान का चाँदना भया आकास मेँ,
मगन मन भया हम लखि पाया ।
दृष्टि के खुले से नजर सब आयगा,
लखा संसार यह झूठि माया ॥
जीव और ब्रह्म के भेद को बूझि कै,
सबद की साच टकसार लाया ।
दास पलटू कहै खोलि परदा दिया,
पैठि के भेद हम देखि आया ॥६४॥

छोड़ि कै ज्ञान को होय बिज्ञान जब,
सत्त के सबद का सोई दागी।
सुन्न समाधि में ध्यान को लाइ कै,
सहज का ख्याल सोइ बीतरागी[१]॥
गगन के बीच में तत्त में मगन है,
अबिरल भक्ति उर जासु जागी।
तुरियातीत ह्वै चित्त जब इक भयो,
रैन दिन मगन है प्रेम पागी॥
जागती जोति में रहै गरकाब ह्वै,
सबद के बीच में सुरति लागी।
दास पलटू कहै संत सोइ चक्कवै[२],
भया अद्वैत जब भर्म भागी॥६५॥

॥ रहनी ॥

छोड़ि कथनी कहै ज्ञान[३] से जुदा रहु,
रैन औ दिवस क्या पढ़ै गीता।
केतिक पंडित मुए नरक में सिधारते,
लोभ औ मोह बसि रहा रीता[४]॥
बिना रहनी रहे मुक्ति ना मिलैगी,
काम औ क्रोध को नाहिं जीता।
दास पलटू कहै बैठु सतसंग में,
आपु में देखि ले राम सीता॥६६॥

॥ भेद ॥

हम बासी उस देस के पूछता क्या है,
चाँद ना सुरुज ना दिवस रजनी।

(१) राग से रहित। (२) चक्रवर्ती। (३) वाचक ज्ञान। (४) खाली।

तीन की गम्मि नहिँ नाहिँ करता करै,
लोक ना बेद ना पवन पानी ॥
सेस पहुँचै नहीं थकित भइ सारदा,
ज्ञान ना ध्यान ना ब्रह्म ज्ञानी ।
पाप ना पुन्न ना सरग ना नरक है,
सुरति ना सबद ना तीन तानी[1] ॥
अखिल[2] ना लोक है नाहिँ परजंत[3] है,
हद्द अनहद्द ना उठै बानी ।
दास पलटू कहै सुन्न भी नाहिँ है,
संत की बात कोउ संत जानी ॥६७॥

जोग को पाइ कै जुगत को ध्याइ कै,
ज्ञान अरु ध्यान इक घाट करना ।
असी संगम महैँ कड़क बिजुली छुटै,
उसी के सीस पै सुरति धरना ॥
सहस कोटि ऊँच है बीच मेँ भानु है,
साँपनी पकरि के बोरि मरना ।
सहस गुंजार मेँ परमली[4] झाल है,
झिलमिली उलटि के पौन भरना ॥
संखिनी डंकिनी सोर सब करैँगी,
सोर सुनि उहाँ से नाहिँ टरना ।
बंक पहार मेँ साँकरी गैल है,
गली के खंड के बीच झरना ॥
हद्द अनहद्द के बीच मेँ जंगला,
सिंह को देखि के नाहिँ डरना ।

(१) तीन गुनोँ का गम्य नहीं है । (२) अखंड । (३) हद । (४) सुगंधित ।

कर्मनी नदी पै भर्मनी ताल है,
ताल के बीच में रहत झरना ॥
चौक से निकरि के जाय बाहर हुआ,
तत्त को पकरि क्यों बैठि रहना ।
सातवें महल पर तत्त का जाल है,
तत्त के जाल से तुरत फिरना ॥
आठवें महल कहकहा[१] दीवाल है,
दीवाल को झाँकि के कूद परना ।
दास पलटू कहै छोड़ मन कसमसी,
पैठि दरियाव दीदार करना ॥६८॥

हद अनहद के पार मैदान है,
उसी मैदान में सोय रहना ।
पैर दक्खिन करै सीस उत्तर धरै,
सबद की चोट सम्हारि सहना ॥
ज्ञान औ ध्यान दोउ थकहिंगे हारि कै,
सहज समाधि में तत्त महना ।
चन्द औ सूर उहँ पहुँचि ना सकहिंगे,
खुसी के लोक में सोक दहना ॥
तानि चादर कँहै करो आराम तुम,
बचन को मानि कै गाँठि गहना ।
दास पलटू कहै दूर की बात है,
बूझि के किसी से नाहिं कहना ॥६९॥

---

(१) एक दीवार की कहानी जिसका होना चीन देश में मशहूर है जिस पर चढ़ कर दूसरी ओर झाँकने से परिस्तान दीख पड़ता है और ऐसा हर्ष होता है कि हँसी के मारे देखनेवाला बेइख्तियार होकर उधर कूद कर गायब हो जाता है।

गगन के बीच में अमी की बुंद है,
पियत इक साँपिनी धार धारा।
साँपिनी मारि के पिये कोउ संत जन,
मुए संसार को फटकि सारा॥
सेस औ संभु नर झुलत हिंडोलना,
कहत औ सुनत ठग बेद हारा।
दास पलटू कहै बुंद है सिंधु में,
मथे ब्रह्मंड तब होय न्यारा॥७०॥

गगन के बीच में ऐन मैदान है,
ऐन मैदान के बीच गल्ली।
सहसदल कँवल में भँवर गुंजार है,
कँवल के बीच में सेत कल्ली॥
इड़ा औ पिंगला सुखमना घाट है,
सुखमना घाट में लगी नल्ली।
सुन्न सागर भरा सत्त के नाम से,
तेहि के बीच में सुरति हल्ली॥
अछै इक बृच्छ है तेहि के डारि में,
पड़ा हिंडोलना प्रेम झुल्ली।
अमी रस चुवै सोइ पियत इक नागिनी,
नागिनी मारि कै बुंद रल्ली॥
बंक के नाल पर तहाँ इक ऊँच है,
तेहुँ के सीस चढ़ि जोति बल्ली।
जोति के बीच में तहाँ इक राह है,
राह के बीच में नाद चल्ली॥

नाद के बीच में तहाँ इक रूप है,
रूप को देखि कै रहत सखी[1]।
दास पलटू कहै होय आरूढ़ जब,
संत को सहज समाधि भली ॥७१॥

गगन में दामिनी चौक में चाँदनी,
चाँद औ सूर गलि भये पानी।
ज्ञान की काछनी तान में तातनी,
सत्त के सबद की कथा बानी ॥
अकथ की काथनी तत्त की माथनी,
पानी औ पवन इक घाट आनी।
दिवस में राजनी[2] सजन में साजनी,
दास पलटू की मुई नानी ॥७२॥

इक कूप गगन के बीच यारो,
जहँ सुरति की डोर लगावता है।
गुरमुख होवै सो भरि पीवै,
निगुरा नहीं जल पावता है ॥
बिन हाथ से ताल मृदंग बाजे,
बिन जंत्री जंत्र बजावता है।
पलटू बिन कान से हम सुना,
बीना कोइ सकस बजावता है ॥७३॥

अष्ट दल कँवल के पात को तोरि कै,
कली पर भँवर तब गगन गाजा।
सुन्न में धजा को बाँधि आगे चले,
जाय निस्सान अनहद्द बाजा ॥

(१) शांति। (२) रात।

चाँद औ सूर दोउ उलटि पाताल गै,
उनमुनी ध्यान तहँ पवन साजा।
सिंध परि कूप में गंग पच्छिम बहै,
सेत पहार पर भँवर भाजा॥
सहसदल कँवल में हंस मोती चुगै,
चंदन के गाछ पर कमठ[1] लागा।
अधर दरियाव में लहर पानी बिना,
गैब की दृष्टि से तत्त माँजा॥७४॥

सातहू सर्ग अपबर्ग के पार में,
जहाँ मैं रहौं ना पवन पानी।
चाँद ना सूर ना राति ना दिवस है,
उहाँ कै मर्म ना बेद जानी॥
ज्ञान ना ध्यान ना ब्रह्मा न बिस्नु है,
पहुँच ना सकै कोउ ब्रह्म-ज्ञानी।
दास पलटू कहै एक ही एक है,
दूसरा नहीं कोउ राव रानी॥७५॥

जोग ना जुगत ना प्रानायाम ना,
सुन्न में ध्यान ना धरत ध्यानी।
नाहिँ कछु ज्ञान है नाहिँ बैराग है,
जाय ना सकै तहँ पवन पानी॥
इड़ा ना पिंगला नाहिं कछु साधना,
सुरत ना सबद ना उठत बानी।
झिलमिली जोति ना, नाहिँ है उनमुनी,
चाँद ना सूर ना ब्रह्म-ज्ञानी॥

(१) कछुवा।

सुषमना नाहिँ कछु पाँच मुद्रा नहीँ,
चित्त ना बुद्धि ना तत्त ज्ञानी ।
मोती ना हंस ना कँवल ना भँवर ना,
हद्द अनहद्द दोउ नाहिँ मानी ॥
गिरा ना लंबिका बंक तुरिया नहीँ,
अजपा जाप नहिँ तीन तानी ।
सहज समाधि के परे की बात है,
दास पलटू कोई संत जानी ॥७६॥

तिरकुटी घाट को उतरु सम्हारि कै,
सुषमना खैँचु गुन बाँधि खूँटा ।
बीच पहार में साँकरी गली है,
गली में कुंड जल परै टूटा ॥
भँवर को देखि कै नाव मुरेरु तू,
चली है नाव तब कुंड छूटा ।
दास पलटू कहै नाव सम्हारना,
सोत में सोत ब्रह्मंड फूटा ॥७७॥

मनै को राज है एक तिहुँ लोक में,
तेहि के अमल में डंड लागै ।
पाँच मोसील[1] मिलि लगे घर घर मँहै,
मारि औ पीटि के रोज माँगैं ॥
चोरी कै भीख लै देत हैं दंड सब,
अमल तो एक फिर कहाँ भागै ।
दास पलटू कहै मच्यो अंधेर है,
बसै सतसंग यहि अमल त्यागै ॥७८॥

(१) मोसिल यानी तहसील करने वाले ।

मुलुक सरीर में भया नबाब मन,
लोभ औ मोह देवान जा के।
अमल दस दिसि किहा फौज को राखि कै,
काम औ क्रोध सीपाह बाँके॥
पाप तहसील वोसूल होने लगी,
कुमति खजानची रहे ता के।
दास पलटू कहै पाँच पच्चीस को,
भया अख्तयार बेइमान पाके॥७६॥

इधर से उधर तू जायगा किधर को,
जिधर तू जाय मैं उधर आवौं।
कोस हज्जार तू जाय चलि पलक में,
ज्ञान की कुटी मैं उहैं छावौं॥
सुमति जंजीर को गले में डारि कै,
जहाँ तू जाय मैं खींच लावौं।
दास पलटू कहै मारिहौं ठौर में,
जहाँ मैदान में पकरि पावौं॥८०॥

॥ माया ॥

माया के फंद से बचा ना कोऊ है,
माया ने किहा संसार सोगी।
सुर नर मुनि फिरि उलटि गे आइ कै,
छोड़ि बैराग फिरि भये भोगी॥
संन्यासी बैरागी उदासी औ सेवरा,
सेख दुरबेस औ जती जोगी।
दास पलटू कहै बूझि हम देखिया,
बिना बिबेक सब भेष रोगी॥८१॥

माया की लहर संसार सब मगन है,
खाय भरि पेट भरि नींद सोया।
राम को नाम नहिँ चेत सपनेहु किहा,
सुभग तन पाइ कै वृथा खोया॥
मोर औ तोर के परा झकझोर में,
काम औ क्रोध का बीज बोया।
दास पलटू कहै देखि संसार को,
बैठि कै महूँ भरि पेट रोया॥८२॥

माया कलवारिनी देत बिष घोरि कै,
पिये बिष सबै ना कोऊ भागै।
संसार बौराइ गा[1] भया बेहोस सब,
लेत नँगियाय[2] ना कोऊ जागै॥
अमल बाँका बड़ा छूटै ना चीसका[3],
जीव के संग जब मुहैं लागै।
एक ठौ परे हैं धूरि में लोटते,
दास पलटू एक चोखि माँगै॥८३॥

माया है राम की लगैगी दौरि कै,
यार फक्कीर सम्हारि रहना।
लोभ औ मोह की बात ना मानिये,
भूख औ नींद जरूर सहना॥
भली औ बुरी संसार सब कहैगा,
गुरू के सबद की ओट गहना।
दास पलटू कहै समय पर बोलिये,
बात सब छोड़ि दे फास[4]-कहना॥८४॥

---

(१) गया। (२) सर्वस लूट लेना। (३) चस्का, स्वाद। (४) खुले।

भाग रे भाग फ़क्कीर के बालके,
कनक औ कामिनी बाघ लागा।
मारि तोहि लेहिँगे पड़ा चिल्लायगा,
बड़ा बेकूफ़ तू नाहिँ भागा॥
सिंगी ऋषि हू से तो मारि लिये,
बचे ना कोऊ जो लाख त्यागा।
दास पलटू कहै बचैगा सोई जो,
बैठि सतसंग दिन राति जागा॥८५॥

॥ कर्म भर्म ॥

पूरब ठाकुरद्वारा पच्छिम मक्का बना,
हिन्दू औ तुरुक दुइ ओर धाया।
पूरब मूरति बनी पच्छिम में कबुर है,
हिन्दू औ तुरुक सिर पटकि आया॥
मूरति औ कबुर ना बोले ना खाय कछु,
हिन्दू औ तुरुक तुम कहा पाया।
दास पलटू कहै पाया तिन्ह आप में,
मूए बैल ने कब घास खाया॥८६॥

॥ निन्दक ॥

संत की निन्दा को करत जो देखिये,
कान को मूँदि ले पाप लागै।
पाप के लगे से नरक में जायगा,
त्राहि कै त्राहि कै दूरि भागै॥
मित्र जो होय तो दुष्ट सम जानिये,
संत की निन्दा सुनि दूरि त्यागै।
दास पलटू कहै करै औ सुनै जो,
नरक के बीच में भीख माँगै॥८७॥

देखि निन्दक कँहै करौं परनाम मैं,
धन्य महराज तुम भक्ति धोया।
किहा निस्तार तुम आइ संसार में,
भक्त के मैल बिन दाम खोया॥
भयो परसिद्ध परताप से आप के,
सकल संसार तुम सुजस बोया।
दास पलटू कहै निन्दक के मुए से,
भया अकाज मैं बहुत रोया॥८८॥

॥ मिश्रित ॥

काम औ क्रोध को आगि बिनु जारि कै,
महादल मोह मैदान टारा।
पाप औ पुन्न के भरम को छोड़ि कै,
गगन के बीच इक जोति बारा॥
जीव अमृत पिवै चुवै आकास से,
जुक्ति से नाथिया नाग कारा।
दास पलटू कहै संत सो अमर हैं,
उलटि कै पकरि तिहुँ काल मारा॥८९॥

पाँच ने सकल संसार को बसि किया,
लोभ औ मोह देवान जा के।
काम औ क्रोध मसलहतिका[1] वे दोऊ,
पाप औ पुन्न सीपाह वा के॥
उजुरख्वाही नहीं गई रैयत सबै,
मुलुक में मारि के किया साके[2]।
दास पलटू कहै देखि इस अमल को,
भागि मैं संत की सरन ताके॥९०॥

(१) सलाहकार। (२) अपना सम्वत अर्थात् कीर्त्ति चलाई।

न ना ध्यान ना जोग ना जुगति है,
मुक्ति चेरी भई द्वार ठाढ़ी।
ीरथ ना बरत ना दान ना पुन्न है,
परी जमराज पर चोट गाढ़ी॥
ूजा अचार ना नेम ना धर्म है,
लेन को आये बैकुंठ बाढ़ी।
ास पलटू कहै राह सब छोड़ि के,
सहज की राह इक संत काढ़ी॥६१॥

सुरति जमुना वही ज्ञान मथुरा बसा,
गोकुला ग्राम बिस्वास पाया।
संत जसोदा देवकी सतगुरू,
नन्द बसुदेव जब प्रेम आया॥
जीव औ ब्रह्म सो कृस्न बलदेव जी,
कंस हंकार को मारि नाया।
बिबेक बृंदाबन छिमा को कदम है,
गऊ औ ग्वाल जिय बीच दाया॥
सनेह की राधिका सील की गोपिका,
तत्त माखन लिहे छीनि खाया।
ध्यान सिर मुकुट धै सबद की काछनी,
काछे है लालजी रहस छाया॥
लगन के कुंज में मगन गोपालजी,
टेर के सुनत आनंद धाया।
दास पलटू कहै गगन के बीच में,
नाद की बाँसुरी सोर लाया॥६२॥

भक्त से द्रोह करि कोऊ ना बचा है,
किया जिन द्रोह सो सबै हारा।
पंडवा पाँच जिताय भारत कँहै,
गहा गज ग्राह जल बीच मारा॥
गये दुरबासा अंबरीख ब्रत टारने,
छुटा है गैब से चक्र धारा।
दास पलटू कहै हेत प्रहलाद के,
खंभ को फोरि कै उद्र[1] फारा॥६३॥

सील की अवध सनेह का जनकपुर,
सत्त की जानकी ब्याह कीता।
मनहिँ दुलहा बने आपु रघुनाथजी,
ज्ञान कै मौर सिर बाँधि लीता॥
प्रेम बारात जब चली है उमँगि कै,
छिना बिछाय जनवाँस दीता।
भूप हंकार के मान को मर्दि कै,
धीरता धनुस को जाय जीता॥
सुरति औ सबद मिलि पाँच भँवरी फिरे,
माँग सेँदुर दिहा राग बीता।
संतोष दै दायजो[2] तत्त पुष्पांजली,
जनकजी बुद्धि बिनवंत[3] कीता॥
किहा है बिदा यह दिहा आसीस है,
लोभ औ मोह से रहौ सीता।
दसएँ महल पर अवधपुर कोहबरे[4],
दास पलटू सूते राम सीता॥६४॥

(१) पेट। (२) दहेज। (३) बिनय। (४) देव पित्र का घर।

बाम्हन तो भये जनेउ को पहिरि कै,
बाम्हनी के गले कुछ नाहिँ देखा।
आधी सूद्रिनि रहै घरै के बीच में,
करै तुम खाहु यह कौन लेखा॥
सेख की सुन्नति से मुसलमानी भई,
सेखानी की नाहिँ तुम कहौ सेखा।
आधी हिन्दुइनि रहै घरै के बीच में,
पलटू अब दुहुन के मारु मेखा॥९५॥

सुन्य के सिखर पर अजब मंडप बना,
मन औ पवन मिलि करै बासा।
एक से एक अनेक जंगल जहाँ,
भँवर गुंजार इक भरै स्वासा॥
नाम सागर भरा झिलिमिलि मोती झरै,
चुनै कोइ प्रेम-रस हंस खासा।
दास पलटू परै जबै दिब दृष्टि में,
जरै सब भर्म तब छुटै आसा॥९६॥

नासूत मलकूत जबरूत माना,
लाहूत की लज्जत जाय चक्खा।
लामकान पर बैठि के जी,
रोसन जमीर फक्कीर पक्का॥
असमान रखाना खुलि गया,
दिल रूह बोलै हक्का हक्का[१]।
पलटूदास कहै मुझे नजर आवै,
हर वक्त चिहार[२] तरफ मक्का॥९७॥

(१) लामकान या सत्यलोक की धुन। (२) चारों।

कनफटा सिरजटा नखी ठाढ़े सुरी,
सैयद सेख दुरवेस हाजी।
मौनी जलसैनी पँचअगिन जे तापते,
करैं उपवास फिर खायँ भाजी॥
जोगी औ जती पौहारी ऊरध-मुखी,
माया के कारन सब दगाबाजी।
दास पलटू कहै झूठ से दूर है,
एक ही साच में राम राजी॥६८॥

तुरुक लै मुर्दा को बब्र में गाड़ते,
हिन्दू लै आग के बीच जारैं।
पूरब वै गये हैं वै पच्छूँ को,
दोऊ बेकूफ[1] ह्वै खाक टारैं॥
वै पूजैं पत्थर को कबर वै पूजते,
भटक कै मुए दै सीस मारैं।
दास पलटू कहै साहिब है आप में,
आपनी समझ बिनु दोऊ हारैं॥६९॥

झूलना

॥ गुरुदेव ॥

सतगुरु साहिब जब मिहर करी,
तब ज्ञान का दीपक बारा है जी।
भर्म अँधेरा छूटि गया,
दसहूँ दिसि भा उजि

(१) मूर्ख।

रैन दिवस[1] टूटै नाहीं,
लागी ज्यों तेल की धारा है जी।
पलटू कहै मोहिं दीख परा,
घट घट में ठाकुरद्वारा है जी ॥१॥

सतगुरु ऐसा तलास कीजै,
ज्यों सिकलीगर का मसकला।
तुरत जौहर निकारि देवै,
इक लहमा पकरि के खूब मला ॥
दिल का मुरचा सब दाग छुटा,
तरवार बनी ज्यों झलझला।
पलटू नामर्द से मर्द हुआ,
तब बाँधि तरवार सिपाह चला ॥२॥

कटाच्छ कै हमरी ओरि ताको,
सतगुरु करौ दाया है जी।
जड़ चेतन दोउ लागि रहे,
जबर तेरी माया है जी ॥
कुछ जोग जुगत बतलाय दीजै,
जा से सोधौं मैं काया है जी।
पलटू तुम दीनदयाल बड़े,
सतगुरु सेती सब पाया है जी ॥३॥

पूरब पुन्न भये परगट,
सतसंग के बीच में जाय परी।
आनंद भयो जब संत मिले,
वही सुभ दिन वहि सुभ घरी ॥

(१) दिन रात, निरंतर।

दरसन करत त्रय ताप मिटे,
बिनु कौड़ी दाम मैं जाय तरी।
पलटू आवागवन छुटा,
रज चरनन की जब सीस धरी ॥४॥

पराई चिता की आगि महैं,
दिन राति जरै संसार है जी।
चौरासी चारिउ खान चराचर,
कोऊ न पावै पार है जी॥
जोगी जती तपी सन्यासी,
सब को उन डारा जारि है जी।
पलटू मैं हूँ जरत रहा,
सतगुरु लीन्हा निकारि है जी ॥५॥

॥ नाम ॥

इक नाम अमोलक मिलि गया,
परगट भये मेरे भाग हैं जी।
गगन की डारि पपिहा बोलै,
सोवत उठी मैं जागि हौं जी॥
चिराग बरै बिनु तेल बाती,
नहिँ दीया नहिँ आगि है जी।
पलटू देखि के मगन भया,
सब छुट गया तिर्गुन दाग है जी ॥६॥

॥ सर्व व्यापक ॥

हम ने यह बात तहकीक किया,
सब में साहिब भरपूर है जी।

अपनी समुझ कुआँ कै पानी,
क्या नियरे क्या दूरि है जी ॥
गाफिल की ओर से सोइ गया,
चेतन को हाल हजूर है जी।
पलटू इस बात को नहिँ मानै,
तिस के मुँह मेँ परै धूर है जी ॥७॥

॥ संत और साध ॥

बादसाह का साह फकीर है जी,
नौबत गैब का बाजता है।
ज्ञान ध्यान की फौज को साधि के जी,
सबर के तख्त पर गाजता है ॥
लाहूत[1] खजाना मारफत का,
सिर नूर का छत्र बिराजता है।
पलटू फकीर का घर बड़ा,
दीन दुनियाँ दोऊ भीख माँगता है ॥८॥

अनुभै परगास भया जिस को,
तिस ही की बात प्रमान है जी।
भीतर के सब खुलि गये पट,
पक्का उसी का ज्ञान है जी ॥
खिल लोक प्रविर्त्ति की बात कहै,
वा का तेज कैसा जैसे भान[2] है जी।
पलटू जगत से पीठि देवै,
नहिँ संत होना औसान[3] है जी ॥९॥

(१) शून्य। (२) सूरज। (३) सहज।

सील सनेह सीतल बचन,
यही संतन की रीति है जी।
सुनत कै प्रान जुड़ाय जावै,
सब से करते वे प्रीति हैं जी॥
चितवनि चलनि मुसक्यानि नवनि,
नहिँ राग दोष हारि जीति है जी।
पलटू छिमा संतोष सरल,
तिन को गावै स्तुति नीति है जी॥१०॥

आसिक इसक पर जो भये,
वे नहिँ चाहैँ करामात है जी।
उन को सोरसार नहीँ आवै,
वे मस्त रहैँ दिन रात है जी॥
नहिँ भूख लगै नहिँ नीँद आवै,
नहिँ पीवत हैँ नहिँ खात हैँ जी।
पलटू हम बूझि बिचारि देखा,
वही साहिब की जाति हैँ जी॥११॥

राजा रंक को एक जानै,
तिसी का नाम फकीर है जी।
कंचन औ काच मेँ भेद नहीँ,
लखै और की पीर है जी॥
सादी गमी कुछ एक नहीँ,
संतोष का मुलुक जगीर है जी।
पलटू अस्तुति निंदा एकै,
सोई रोसन-जमीर[1] है जी॥१२॥

(१) अंतरयामी।

जंगल के बीच मंगल करै,
किसी की नहिँ परवाह है जी।
सबर के तख्त पर जाय बैठा,
अजब फकीर बादसाह है जी॥
चाहना की एक राह मूँदी,
सौ ओर से निकरी राह है जी।
पलटू परालबध मोदी भई,
वोही करती निरबाह है जी॥१३॥

कोइ जोग जुगत की साधन मेँ,
कोई बैराग लै ढूँढ़ता है।
कोइ साखी सबद बनाय कहै,
जोरि जोरि बैठि के गूँथता है॥
कोइ भाँग धतूरा खाइ के जी,
गुफा मेँ बैठि के झूमता है।
कोइ बेद पुरान सिद्धांत पढ़ै,
कोई बैठि के निर्गुन गूनता है॥
कोइ उदासी बनि बन बन फिरै,
कोइ घायल होइ के घूमता है।
पलटू फकीर की राह जुदी,
इन बातोँ के ऊपर थूकता है॥१४॥

कवायद असमान के बीच होवै,
दिल फहम से मारि गिरावता है।
बंदूक हवा करि दीठ गोली,
दम को साधि चलावता है।
गूमठ[1] मेँ जब जाय लगा,
मुराकबे[2] नजरि मेँ आवता है।

(१) गुम्बज। (२) ध्यान।

खिड़की पारे जब निकरि गया,
पलटू दुरबेस कहावता है ॥१५॥

॥ गुप्त ॥

दीद बर दीद नजर आवै,
तिस को साच करि जानिये जी।
इस दिल सेती फहम[१] करै,
उस को तब जाइ पहिचानिये जी ॥
इस दिल की रूह असमान मँहै,
लाहूत के बीच में आनिये जी।
पलटू ना जाहिर बात करै,
उस की बात को मानिये जी ॥१६॥

॥ वैराग ॥

धरम करम सब छोड़ि दिया,
छोड़ी जगत की आस है जी।
और कछू अब नहिँ भावै,
संतन के संग बिलास है जी ॥
अस्तुति निन्दा को पीठि दिया,
सनमुख सबद में बास है जी ॥
पलटू अधोमुख कूप मँहै,
दीया जरै अकास है जी ॥१७॥

पाँच भूत जो बस्सि किया,
तो का लै राम को करना जी।
आपुइ वह रामजी होइ गया,
जियत भया जब मरना जी ॥

(१) समझ।

संसार कँहै जब पीठि दिया,
तब का संसार से तरना जी।
पलटू जब इन्द्री बस्सि किया,
तब का मुक्ती लै करना जी ॥१८॥

॥ सतसंग ॥

भूले मन को समुझाय लीजै,
सतसंग के बीच में जाइ के जी।
अब की बेर नहिँ चूकना है,
सुन्दर मानुष तन पाइ के जी॥
ज्ञान ध्यान की बात को बूझि लीजै,
मन में कुछ ठीक ठहराइ के जी।
पलटू गगन के बीच मारै,
सुरति कमान चढ़ाय के जी ॥१९॥

चढ़ी नाम भाठी चुवै प्रेम प्याला,
पीना सोई सराब है जी।
मजलिस दुर्वेस की मतवारी,
जिकिर[1] खाना कबाब है जी॥
साहिब मासूक आसिक बंदा,
नमक में जैसे आब है जी।
पलटू खुदाय की राह यही,
और करना अजाब है जी ॥२०॥

॥ भेप ॥

संतन के बीच में टेढ़ रहैं,
मठ बाँधि संसार रिझावते हैं।

(१) सुमिरन।

दस बीस सिष्य परमोधि लिया,
सब से वह गोड़ धरावते हैँ ॥
संतन की बानी काटि के जी,
जोरि जोरि के आपु बनावते हैँ ।
पलटू कोस चार के गिर्द में जी,
सोइ चक्रवती कहलावते हैँ ॥२१॥

॥ चितावनी ॥

पैदा भया मुट्ठी बाँधे,
फिरि हाथ पसारे जायगा जी ।
जने चारि के काँधे चढ़ि चाले,
आखिर को फेरि पछितायगा जी ॥
दुनियाँ दौलत इहाँ लूटै,
उहाँ मार घनेरी खायगा जी ।
पलटू जब बूझि है धरमराजा,
उहाँ तब क्या बतियायगा[१] जी ॥२२॥

॥ बिरह ॥

सच्चे साहिब के मिलने को,
मेरा मन लिहा बैराग है जी ।
मोह निसा[२] में सोय गई,
चौंक परी उठि जाग है जी ।
दोउ नैन बने गिरि के झरना,
भूषन बसन किया त्याग है जी
पलटू जीयत तन त्यागि दिया,
उठी बिरह की आगि है जी ॥२३॥

(१) बोलेगा । (२) रात ।

॥ प्रेम ॥

सोरहो सिंगार बनाइ कै जी,
झमकि झमकि चली प्यारी।
सजन के रूप को देखि कै जी,
झुकि झुकि परै जस मतवारी॥
तन मन की सुधि सब जाति रही,
हिये में लगी प्रेम चोट भारी।
पलटू जान्यो मैं आपु को जी,
अभिगति की है इक गति न्यारी॥२४॥

लगन जिसी से लागि रही,
काज उसी से सरा है जी।
सब लोक की लाज को तोरि डारे,
उसी के घर करो डेरा है जी॥
मेरे मन में कुछ डेर नाहीं,
हँसैगा लोग बहुतेरा है जी।
पलटू घूँघट को खोलि डारो,
समरथ सतगुरु का चेरा[1] है जी॥२५॥

साहिब के दास कहाय यारो,
जगत की आस न राखिये जी।
समरथ स्वामी को जब पाया,
जगत से दीन न भाखिये जी॥
साहिब के घर में कौन कमी,
किस बात को अंतै आखिये जी।

(१) टहलुआ।

पलटू जो दुख सुख लाख परै,
वहि नाम सुधा रस चाखिये जी ॥२६॥

पहिले संसार से तोरि आवै,
तब बात पिया की पूछिये जी।
तरवार दुइ ठो है म्यान एकै,
किस भाँति से वा मैं कीजिये जी॥
मीठे प्याले को दूर करो,
करू[1] प्रेम पियाला पीजिये जी।
पलटू जब सीस उतारि धरै,
तब राह पिया की लीजिये जी ॥२७॥

॥ सूरमा ॥

फहम की फौज बनाइ के जी,
सुरति कमान चढ़ाइ लीता।
बख्तर प्रेम का पहिनि के जी,
गम[2] फील सबर निसान कीता॥
अकिल के बान छुड़ाइ के जी,
दुर्मति के दल को मारि लीता।
खुदी खूब कुफर को मारि के जी,
पलटू दुरवेस मैदान जीता ॥२८॥

॥ मन ॥

उसी सावज[3] को मारना जी,
न हाड़ न माँस न चाम स्वासा।
पूँछ न पाँव न मुख वा के,
उसी का सालन बनै खासा॥

(१) कड़वा। (२) शोक। (३) शिकार।

मुरदा के मारे वह मरै,
जीवत बधिक की नाहिँ आसा।
पलटू जो सावज मारि खावै,
तिसी का आवागवन नासा ॥२९॥

बनिया यह बानि[1] ना छोड़ता है,
फिर फिर पसँगा मारता है।
केतक बार तैँ चोट खाया,
उस याद को फेर बिसारता है॥
खारी के बीच मेँ खाँड़ डारै,
दुरमति को नाहिँ मिटावता है।
पलटू केता समझाय देखा,
तिस पर भी नाहिँ सम्हारता है॥३०॥

बिन मूल के झाड़ इक ठाढ़ि रहा,
तिस पर आ बैठे दुइ पच्छी।
इक तो गगन मेँ उड़ि गया,
इक लाय रहा बकु ध्यान मच्छी॥
गगन मेँ जाइ के अमर भया,
वह मरि गया चारा जिन भच्छी।
पलटू दोऊ के बीच खेलै,
तिहि बात है आदि अनादि अच्छी॥३१॥

माया संसार को जीति आई,
संसार चला सब हारि है जी।
जोगी जती औ सिद्ध तपी,
उनको भी लेती मारि है जी॥

(१) आदत।

उनके निकट नहीं आवै,
जिनके बिबेक बिचारि है जी।
पलटू संतन से वह डरती,
वे फेंकि मारैं पैजारि[1] है जी ॥३२॥

मोटी माया तो सब तजै,
मेंहीं नहीं तजि जाति है जी।
ओही उनकी खोराक भई,
मोटै रहै दिन राति है जी ॥
पलटू जो मेंहीं माया तजै,
वोही साहिब की जाति है जी ॥३३॥

॥ उपदेश ॥

जक्त की प्रीति को देखि लिया,
नाहक को लोग ठगात हैं जी।
स्वारथ के हेतु से प्रीति करैं,
दौलत बेटा मँगात हैं जी ॥
लम्बी दंडवतैं आप करैं,
दगाबाज की प्रीति कहात है जी।
पलटू इन से सम्हारि रहौ,
तेरे मन को चोर लगात है जी ॥३४॥

इलम पढ़ा पर अमल नहीं,
अमल बिनु इलम खाक है जी।
इलम पढ़ै औ अमल करै,
उसके हम तो मुस्ताक हैं जी ॥

(१) जूती।

बेहद कथै औ हद्द रहै,
उसका तो मुँह नापाक है जी।
पलटू गुफ़्तन सोई दीदन,
वह तो मारफ़त की नाक है जी ॥३५॥

स्यार की चाल को छोड़ बे बालके,
आपु को खूब दरिआफ[1] कीजे।
सिंह है तुही तहकीक कर आप में,
स्यार के संग को छोड़ दीजे ॥
अहार तो कीजिये आपु से मारिकै,
और कै मारा ना कभी लीजे।
पलटू तू सिंह है गरज बे हाँक दै,
पकरि गजराज घै पाँव मीँजे ॥३६॥

दुनिया कँहै जब तरक[2] किया,
कुछ दीन[3] की लज्जत टोवना है।
काम क्रोध पकरि कै मारि डारौ,
खुदी खूब के ताईँ खोवना है ॥
यारो इस बात की लाज करौ,
संतोष का तोसा पोवना[4] है।
पलटू साहिब के घर माहीँ,
टुक पाँव पसारि के सोवना है ॥३७॥

पहिले फना[5] फिर सेख होवै,
कदम मुरसिद को पाइ के जी।

(१) दरियाफ़्त = निश्चय। (२) त्याग। (३) परमार्थ। (४) तैयार करना, जैसे रोटी पोते हैं। (५) मृत, मुर्दा।

तब फना फिल्लाह होवै,
मारफत मकान ठहराय के जी ॥
मुरसिद मुरीद पर मिहर करै,
लाहूत को देइ पहुँचाइ के जी।
पलटू हूहू आवाज आवै,
रूह खास दीदन[1] उहाँ जाइ के जी ॥३८॥

॥ उपदेश भेष को ॥

संग्रह त्याग दोऊ को छोड़ि देवै,
तब बात पड़ैगी ठीक है जी।
अस्तुति निन्दा काँच कंचन में,
भेद राखै नहिँ नेक है जी ॥
चार बरन आसरम धरम,
ये भी गाड़ी की लीक हैँ जी।
पलटू सब सेती जुदा रहै,
येही बात तहकीक है जी ॥३९॥

घर घर से चुटकी माँगि के जी,
छुधा को चारा डारि दीजै।
फूटा इक तुम्बा पास राखौ,
ओढ़न को चादर एक लीजै ॥
हाट बाट महजित में सोय रहौ,
दिन रात सतसंग का रस पीजै।
पलटू उदास रहौ जक्त सेती,
पहिले वैराग यहि भाँति कीजै ॥४०॥

बासी टुकड़ा को माँगि खाना,
महजित के बीच में सोवना जी।

(१) दर्शन करे।

ऊपर इक चिथरा ओढ़ि लेना,
अंदर को साफ़ करि धोवना जी ॥
दिल में आवै सो कहि देना,
उस बात को नाहीं गोवना[1] जी ।
पलटू गुजर गुजरान गई,
सिर खोलि के फिर क्या रोवना जी ॥४१॥

॥ आपा ॥

हमता ममता को दूरि करै,
यही तो मूल जंजाल है जी ।
चाह अचाह को छोड़ि देवै,
यहि सहज सुभाव की चाल है जी ॥
मोर औ तोर बिकार छूटै,
सब से मिलै हर हाल है जी ॥
पलटू जिन बासना बीज भूना,
वोही साहिब का लाल है जी ॥४२॥

मेरी मेरी तू क्या करै,
मेरी मँहै अकाज है जी ।
साहिब सब काम सँभारि लेवै,
मेरी से आवै बाज[2] है जी ॥
जिसका तू दास कहावता है,
तिसको इस बात की लाज है जी ।
पलटू तू मेरी छोड़ि देवै,
तीनि लोक तेरा राज है जी ॥४३॥

---

(१) छिपाना । (२) बाज आना = छोड़ देना ।

पलटू जो संत उपदेस करैं,
सोई कीजे बिस्वास है जी ॥४६॥

॥ ज्ञान ॥

जिस चोट लगी है ज्ञान की जी,
तिस को नहीं कुछ भावता है।
अठ सिद्धि नौ निधि भईं आइ खड़ी,
तिस को वह दूरि बहावता है॥
संसार कँहै दै पीठि बैठा,
अपने मन को खूब रिझावता है।
पलटू जहँ मन की गम्मि नहीं,
तहाँ वह जोति जगावता है॥५०॥

कर्म बिना नहिं ज्ञान होवै,
कर्म कँहै नहिं निंदिये जी।
फल कारन ज्यों झाड़ फूलै,
फूल झरि जाय फल लीजिये जी॥
पाछे सेती बेटा होवै,
पहिले मुसकत कीजिये जी।
पलटू पहिले जब ऊख बोवै,
पाछे सेती रस पीजिये जी॥५१॥

जो गया साहिब के खोजने को,
सो आपे गया हेराय है जी।
समुँदर के बीच में बुंद परा,
उसी में गया समाय है जी॥
पानी लहरि लहरि पानी,
को भेद सकै अलगाय है जी।

पलटू हरफ मसी[१] दोय नाहीं,
यह बात ले ठीक ठहराय है जी ॥५२॥

॥ मुक्ति ॥

मुक्ति मुक्ति सब खोजत है,
मुक्ति कहो कहँ पाइये जी।
मुक्ति के हाथ औ पाँव नहीं,
किस भाँति सेती दिखलाइये जी॥
ज्ञान ध्यान की बात बूझिये,
या मन को खूब समझाइये जी।
पलटू मूए पर किन्ह देखा,
जीवत ही मुक्त हो जाइये जी ॥५३॥

॥ भेद ॥

उठै झनकार गगन के बीच में,
लगा दिन राति इक रंग है जी।
टूट तहँ लगी है सुरति और निरति की,
तान गावै सबद सोहंग है जी॥
सहज के खेल में जोति हीरा बरै,
नहीं कोइ दूसरा संग है जी।
पलटू महल अठएँ ऊपर गई,
हवास देखि के दंग[२] है जी ॥५४॥

उस देस की बात मैं कहता हूँ,
असमान के बीच सुराख है जी।
बादसाह उसी के बीच बैठा,
सूझि परै बिनु आँख है जी॥

(१) सियाही। (२) हक्का बक्का।

सुरुख तो उसका चिहरा है,
आफताब तसद्दुक लाख है जी[१]।
पलटू वहँ हूहू अवाज आवै,
उसमें मेरा दिल मुस्ताक है जी ॥५५॥

प्रतिबिंब अकास को देखा चहै,
भरै घट में उस का भास है जी।
उसी घट को फिर फोरि डारै,
आखिर को रहै अकास है जी॥
इस भाँति से जड़ सरीर मँहै,
चेतन करै परगास है जी।
पलटू सरीर का नास होवै,
चेतन का नाहीं नास है जी ॥५६॥

अपने सरूप को जिन्ह पाया,
वह जाय रहा भव पार है जी।
असाध को साधि चेतन्न किया,
भीतर बाहर उजियार है जी॥
जीव ब्रह्म की गाँठि को खोलि डारा,
निरवार लिया सब सार है जी।
पलटू कुछ भूख पियास नहीं,
उसी नाम का एक अधार है जी ॥५७॥

उस घर का भेद न कोउ जाने,
जहवाँ सेती जिव आवता है।

(१) त्रिकुटी का धनी जिसका रक्त वर्ण है और जिसके तेज पर लाखों सूरज न्योछावर हैं।

सब खोजत खोजत मूइ[1] गये,
उस घर का भेद न पावता है ॥
अधबीच सेती सब लोग फिरे,
उन्ही सेती ठहरावता है ।
पलटू हम ने तहकीक किया,
सब और का और बतावता है ॥५८॥

॥ पंडित ॥

बेद पुरान पंडित बाँचै,
करता अपनी दूकान है जी ।
अरथ को बूझि के टीका करै,
माया में मन बिकान है जी ॥
औरन को परमोध करै,
खाली अपना मकान है जी ।
पलटू कागद में खोजत है,
साहिब कहीं लुकान है जी ॥५९॥

॥ निंदक ॥

और को मैं नहिं जानत हौं,
निंदक साहिब मेरा है जी ।
जिन्ह ने मेरी नजात[2] किया,
करौं कदम में डेरा है जी ॥
धोबी होय करि साफ करै,
ऐसा गुरू हम हेरा है जी ।
पलटू उन्हैं दंडौत करै,
वोही साहिब हम चेरा हैं जी ॥६०॥

---

(१) मर । (२) उद्धार ।

संतन की निंद[1] न कीजिये जी,
संतन की निंद में नाहिँ भला।
चौरासी भोग वह भोगि आया,
चौरासी भोगन फेरि चला॥
संतन को कुछ परवाह नहीँ,
अपने पाप सेती वह आप जला।
पलटू उस का जो मुँह देखै,
तिस का भी मुँह फिर होय काला॥६१॥

॥ मिश्रित ॥

भजनीक जो होय सो भजन करै,
भजनीक के बीच में हम नाहीँ।
भजन में जाइ के बैठि रहै,
अब कौन करै आवा जाही॥
लोन की डेरी[2] फिर कौन खावै,
जब जाय परी वह सिंधु माहीँ।
पलटू कहकहा[3] जिन्ह भाँका,
उन को अब आवना क्या चाही॥६२॥

द्वादस आँगुर बैठे चले,
चलत अठारह जाय है जी।
सूते के ऊपर तीस आँगुर,
चौँसठि मैथुन को थाह है जी॥
जती तपी की आठ आँगुर,
जोगी की चारि ठहराय है जी।

(१) निंदा। (२) डली। (३) एक दीवार कहानी की जिसका होना चीन देश में हूर है जिस पर चढ़ कर दूसरी ओर झाँकने से परिस्तान दीख पड़ता है और ऐसा हर्ष कि हँसी के मारे देखनेवाला वेइख्तियार होकर उधर कूद कर गायब हो जाता है।

जिस के भीतर बाहर नाहीँ,
तेहि काल कधी नहिँ खाय है जी ॥
पलटू आठ अँगुर जाय भीतर को,
वा की देह नहीँ नसाय है जी ॥६३*॥

भूत पिसाच जो पूजत हैँ,
फिर फिर होवैँ वे भूत है जी ।
भूत जोनि भरमत फिरैँ,
उनका वही आकूत है जी ॥
गुबरैला फूल पै ना बैठे,
वो जा बैठे गुह मूत पै जी ।
पलटू कुल रीति नहीँ छोड़ैँ,
जहाँ बाप गया तहाँ पूत है जी ॥६४॥

पंडित अच्छर को बूझि गया,
फिर नहिँ पोथी वह बाँचैगा ।
भिच्छुक सेती बादसाह भया,
वह नहिँ भिच्छा को जाचैगा[१] ॥
मूरति की सूरति आप भया,
मूरति आगे क्या नाचैगा ।
पलटू जगत की चाल भूलै,
जब अपने रँग मेँ राचैगा ॥६५॥

चोर साह का काला मुँह करिके,
जंगल के बीच मेँ सोवना जी ।

---

*बैठने में जीव की स्वासा बारह अंगुल, चलने मे अट्ठारह, सोने में तीस, मैथुन में चौंसठ, जती की आठ और जोगी की चार अंगुल बाहर को जाती है परन्तु पूरे अभ्यासी को स्वासा आठ अंगुल भीतर को जाती है। (१) माँगैगा।

त्यागै तन की आस कसौटी खरी है।
अरे हाँ पलटू तब रीझैगा राम भक्ति क्या परी है[1] ॥५॥

॥ संत और साध ॥

सत भये बादसाह गैब के तखत पर।
छत्र फिरै हरिनाम किहा तिहु लोक सर[2] ॥
धजा फरकै सुन्न अदल भी बड़ी है।
अरे हाँ पलटू नौबति आठौ पहर गगन में झरी है ॥६॥

सब में बड़े हैं संत दूसरा नाम है।
तिसरे दस औतार तिन्हैं परनाम है ॥
ब्रह्मा बिसुन महेस सकल संसार है।
अरे हाँ पलटू सब के ऊपर संत मुकुट सरदार है ॥७॥

जीवन है दिन चार भजन करि लीजिये।
तन मन धन सब वारि संत पर दीजिये ॥
संतहि से सब होय जो चाहै सो करैं।
अरे हाँ पलटू संग लगे भगवान संत से वे डेरैं ॥८॥

ऋद्धि सिद्धि से बैर संत दुरियावते।
इन्द्रासन बैकुंठ बिष्टा सम जानते ॥
करते अबिरल[3] भक्ति प्यास हरि नाम की।
अरे हाँ पलटू संत न चाहैं मुक्ति तुच्छ केहि काम की ॥९॥

जिन्ह के ज्ञान बैराग भक्ति में प्रीति है।
रहनी कहनी एक हारि ना जीति है ॥
संतोषी निरवृत्ति भजन पर सिर दिया।
अरे हाँ पलटू सबद बिबेकी संत आतमा बसि किया ॥१०॥

---

(१) गिरी पड़ी है या मारी मारी फिरती है। (२) घेर। (३) निरंतर।

आगम कहैं न संत भड़ेरिया कहत है ।
संत न औषधि देत बैद यह करत है ॥
झार फूँक ताबीज ओझा को काम है ।
अरे हाँ पलटू संत रहित परपंच[1] राम को नाम है ॥११॥

मोह माया को त्यागि जगत से भगे हैं ।
करि इन्द्री का दमन भजन में लगे हैं ॥
ज्ञान बिबेक बिचार रहनि में रहत हैं ।
अरे हाँ पलटू हरि संतन की बात ऊधो से कहत हैं ॥१२॥

केहू भेष में नाहिं रहै अड़बंग[2] है ।
देवे मँहै कुसाद[3] खाय में तंग है ॥
जग से रहै उदास महरमी[4] अंत के ।
अरे हाँ पलटू ऐसी रहनि रहै सो लच्छन संत के ॥१३॥

बिगत राग[5] जो होय ज्ञान में चकवै ।
तुरिया से अातीत भजन में पकवै ॥
रहनी गहनी एक सबद पहिचानिये ।
अरे हाँ पलटू ऐसा जो कोइ होय गरू करि मानिये ॥१४॥

आसन दृढ़ जो होय नींद आहार में ।
अठएँ लोक की बात कहै टकसार में ॥
आठों पहर असोच रहै दिल खुसी पर ।
अरे हाँ पलटू तन मन धन सब वार डारिहौं उसी पर ॥१५॥

दुख सुख संपति बिपति मान अपमान है ।
सत्रु मित्र भूपाल सो एक समान है ॥

---

(१) इन झगड़ों से अलग । (२) बेपरवाह । (३) दूसरों के देने में उदारता और अपने खर्च में तंगी । (४) भेदी । (५) कामना से रहित ।

सादी में सुख होय गमी में रोवना।
अरे हाँ पलटू हर्ष सोक जो रहै फकीरी खोवना ॥२७

॥ भेष ॥

अटकि रहे सब जाय माया का चहला भारी।
बूड़ैं औ उतरायँ पंडित ज्ञानी ब्रह्मचारी ॥
ये कलऊ के भक्त ब्याज दे करते बट्टा।
अरे हाँ पलटू बटुरि बटुरि सब स्यार सिंह को मारैं ठट्टा॥२८।

सस्ते मँहै अनाज खरीद के राखते।
मँहगी में डारैं बेचि चौगुना चाहते ॥
देखो यह बैराग दाम को गाड़ते।
अरे हाँ पलटू जम की बात है दूर हाकिम अब डाँड़ते ॥२९॥

करते बट्टा ब्याज कसब है जगत का।
माया में है लीन बहाना भगति का ॥
तनिक कहीं नहिं कुछ गया बैराग है।

करामाति नट खेल अंत पछितायगा।
चटक मटक दिन चारि नरक में जायगा॥
भीर भार से संत भागि के लुकत हैं।
अरे हाँ पलटू सिद्धाई को देखि संत जन थुकत हैं॥३३॥

॥ पाखंडी ॥

झूठा सब संसार झूठै पतियात है।
दुइ झूठे इक ठौर नरक में जात हैं॥
जहँवा सुनैं पखंड तहाँ सब धावते।
अरे हाँ पलटू संतन के रे पास कोऊ नहिँ आवते॥३४॥

जक्त भक्त कछु नाहिँ बीच में रहि गये।
ज्यौं अधमारा साँप केहू ओर ना भये॥
बेँचि बेँचि हरि नाम दाम लै लै धरै।
अरे हाँ पलटू सबद न बूझै तनिक फकीरी क्या करै॥३५॥

॥ चितावनी ॥

क्या लै आया यार कहा लै जायगा।
संगी कोऊ नाहिँ अंत पछितायगा॥
सपना यह संसार रैन का देखना।
अरे हाँ पलटू बाजीगर का खेल बना सब पेखना[१]॥३६॥

जीवन कहिये झूठ साच है मरन को।
मूरख अजहूँ चेति गहो गुरु सरन को॥
मास के ऊपर चाम चाम पर रंग है।
अरे हाँ पलटू जैहै जीव अकेल कोऊ ना संग है॥३७॥

भजि लीजै हरि नाम सोई तो नफा है।
आवैगा जब काल तेही दिन रफा[२] है॥

(१) दृश्य, नक़्ल। (२) निबटेगा।

बाजीगर को ढोल तमासे सब गया ।
अरे हाँ पलटू बिगरि गया जब नाच नचनियाँ रहि गया ॥३८॥

सुर नर मुनि इक समय सबै मरि जाहिँगे ।
राजा रंक फकीर काल धै खाहिँगे ॥
तीनि लोक सब डेरै भीम की हाँक मेँ ।
अरे हाँ पलटू जोधा भीम समान मिले हैँ खाक मेँ ॥ ३९॥

भूलि रहा संसार काँच की झलक में ।
बनत लगा दस मास उजाड़ा पलक में ॥
रोवनवाला रोया आपनी दाह से ।
अरे हाँ पलटू सब कोइ छैँके ठाढ़ गया किस राह से ॥४०॥

माया ठगिनी बड़ी ठगे यह जाति है ।
बचे न इह से कोय लगी दिन राति है ॥
कौड़ी नाहीँ संग करोरिन जोरि कै ।
अरे हाँ पलटू गे राजा रंक फकीर लँगोटी छोरि कै ॥४१॥

कच्चा महल उठाय कच्चा सब भवन है ।
दस दरवाजा बीच झाँकता कवन है ॥
कच्ची रैयत बसै कच्ची सब जून है ।
अरे हाँ पलटू निकरि गया सरदार सहर अब सून है ॥४२॥

हाथ गोड़ सब बने नाहिँ अब डोलता ।
नाक कान मुख ओही नाहिँ अब बोलता ॥
काल लिहिसि अगुवाय चलै ना जोर है ।
अरे हाँ पलटू निकरि गया असवार सहर मेँ सोर है ॥४३॥

आलम का बाच्छाह दुहाई मुलुक मेँ ।
हाथ जोरि सब खड़े हकूमत खलक मेँ ॥

तेल फुलेल लगाय जरकसो[1] पाग है ।
अरे हाँ पलटू आखिर होना खाक लील का दाग है ॥४४॥

आया मूठी बाँधि पसारे जायगा ।
छूछा आवत जात मार तू खायगा ॥
किते बिकरमाजीत साका-बँधि मरि गये ।
अरे हाँ पलटू राम नाम है सार सँदेसा कहि गये ॥४५॥

जो जनमा सो मुआ नाहिँ थिर कोइ है ।
राजा रंक फकीर गुजर दिन दोइ है ॥
चलती चक्की बीच परा जो जाइ कै ।
अरे हाँ पलटू साबित बचा न कोइ गया अलगाइ कै ॥४६॥

माया यार फकीर कँहै जंजाल है ।
साँप खिलौना करै एक दिन काल है ॥
माँछी मधु लै धरै छोरि कोइ खायगा ।
अरे हाँ पलटू सिंह करै जो जतन[2] स्यार होइ जायगा ॥४७॥

टोप टोप रस आनि मक्खी मधु लाइया ।
इक लै गया निकारि सबै दुख पाइया ॥
मो को भा बैराग ओहि को निरखि कै ।
अरे हाँ पलटू माया बुरी बलाय तजा मैं परखि कै ॥४८॥

फूलन सेज बिछाय महल के रंग मैं ।
अतर फुलेल लगाय सुन्दरी संग मैं ॥
सूते छाती लाय परम आनन्द है ।
अरे हाँ पलटू खबरि पूत को नाहिँ काल कौ फन्द है ॥४९॥

---

(१) जरी की । (२) संचना ।

कलिया नान-पुलाव पेट भरि खाइ कै।
सीसी मँहै सराब चिराग जराइ कै॥
चौरे बन्द लगाय गले में सोवते।
अरे हाँ पलटू लगे फिरिस्ते आय पूत तब रोवते॥५०॥

झूठ साच कहि दाम जोरि कै गाड़ने।
औषधि कूटहि रोज जिये के कारने॥
जीयै बरष हजार आखिर को मरैगा।
अरे हाँ पलटू तन भी नाहीँ संग कहा लै करैगा॥५१॥

॥ भक्ति ॥

खाला[1] कै घर नाहिँ भक्ति है राम की।
दाल भात है नाहिँ खाये के काम की॥
साहिब का घर दूर सहज ना जानिये।
अरे हाँ पलटू गिरे तो चकनाचूर बचन को मानिये॥५२॥

समुझि बूझि पग धरै मरै की चाल है।
सिर के मोल बिकाय फकीरी ख्याल है॥
दूध छठी का जाय तनिक ना मानते।
अरे हाँ पलटू साहिब का घर दूर खिलौना जानते॥५३॥

पहिले कबर खुदाय आसिक तब हूजिये।
सिर पर कफ्फन बाँधि पाँव तब दीजिये॥
आसिक को दिन राति नाहिँ है सोवना।
अरे हाँ पलटू बेदर्दी मासूक दर्द कब खोवना॥५४॥

जो तुझको है चाह सजन को देखना।
करम भरम दे छोड़ि जगत का पेखना[2]॥

(१) मौसी। (२) डिम्भ, दिखावा।

बाँध सुरत की डोरि सब्द में पिलैगा ।
अरे हाँ पलटू ज्ञान ध्यान के पार ठिकाना मिलैगा ॥५५॥

छोड़ौं ना दरबार इसिम[1] पर मरौंगा ।
सिफति[2] करौं दिन राति टारे ना टरौंगा ॥
जिव मेरो बरु जाय हारिहौं जनम को ।
अरे हाँ पलटू तेरो अब कहलाय कहावौं कवन को ॥५६॥

॥ सूरमा ॥

आठ पहर की मार बिना तरवार की ।
चूके सो नहिं ठौर लड़ाई धार की ॥
उसही से यह बनै सिपाही लाग का ।
अरे हाँ पलटू पड़ै दाग पर दाग पंथ बैराग का ॥५७॥

कड़ुवा प्याला नाम पिया सो ना जरै ।
देखा देखी पिवै ज्वान सो भी मरै ॥
धर पर सीस न होय उतारै भुइँ धरै ।
अरे हाँ पलटू छोड़ै तन की आस सरग पर घर करै ॥५८॥

भक्ति करै कोइ सूर जक्त से तोरि कै ।
ज्ञान लिये समसेर[3] लड़ै झकझोरि कै ॥
रहै खेत पर ठाढ़ भक्ति की डेर[4] मँहै ।
अरे हाँ पलटू झूठा टिकै न कोइ राम के घर मँहै ॥५९॥

राम के घर की बात कसौटी खरी है ।
झूठा टिकै न कोय आजु की घरी लै ॥
जियतै जो मरि जाय सीस लै हाथ में ।
अरे हाँ पलटू ऐसा मर्द जो होय परै यहि बात में ॥६०॥

---

(१) नाम । (२) गुनानुवाद । (३) तलवार । (४) डर ।

सबद लिहे तरवारि म्यान है ज्ञान का ।
दुरमति मुरचा खोय मसकला ध्यान का ॥
सतसंगति की ओटि मूठि है नाम की ।
अरे हाँ पलटू रहै हाथ में लगी समय पर काम की ॥६१॥

साहिब के घर बीच गया जो चाहिये ।
सिर को धरै उतारि कदम को नाइये ॥
जियते जी मरि जाय सोई बहुरायगा ।
अरे हाँ पलटू जेकरे जिव की चाह सोई भगि जायगा ॥६२॥

॥ विश्वास ॥

जिन्हैं भरोसा एक बार नहिं बाँकता ।
जल थल लगै न बाय रच्छा कै राखता ॥
हरि को सरन कि लाज उबारै कष्ट से ।
अरे हाँ पलटू भारत में भरदूल बचा गज घंट से ॥६३॥

बार न बाँकै मोर कोई क्या करैगा ।
रूठै तीनिउँ लोक नाहिं मन डरैगा ॥
रच्छा करते आप दिये दोउ हस्त[1] हैं ।
अरे हाँ पलटू सिर पर गोबिंदनंद[2] खड़े समरत्थ हैं ॥६४॥

सिंह जो भूखा रहै चरै ना घास को ।
हंस पिवै ना नीर करै उपवास[3] को ॥
सती एक औ सूर पाँच हैं काम के ।
अरे हाँ पलटू संत न माँगैं भीख भरोसे राम के ॥६५॥

॥ शरण ॥

जप तप ज्ञान बैराग जोग ना मानिहौं ।
सरग नरक बैकुंठ तुच्छ सब जानिहौं ॥

---

(१) हाथ । (२) पलटू साहिब के गुरू का नाम । (३) फ़ाका ।

लोक बेद ना सुनौं आपनी कहौंगा ।
अरे हाँ पलटू एक भक्ति सिर धरौं सरन ह्वै रहौंगा ॥६६॥

दीन्हा संतन डारि राम पर भार है ।
संतन के रे हेतु दसो अवतार है ॥
तजि के हरि बैकुंठ रहत हैं साथ में ।
अरे हाँ पलटू संतन के रखवार सुदरसन हाथ में ॥६७॥

॥ उपदेश ॥

धरो फूंकि के पाँव कुसँग ना कीजिये ।
भजन मँहै भँग होय सोच ना लीजिये ॥
कोउ ना पकरै फेट करै जो त्याग है ।
अरे हाँ पलटू माया संग्रह करै भक्ति में दाग है ॥६८॥

मन में बिनती करै डगमगी छोड़ि दै ।
जरै मरै अब बनै सिंधोरा हाथ लै ॥
मरै कँहै जब चली सगुन तब क्या करै ।
अरे हाँ पलटू सती बटोरै बस्तु जरै से जब डरै ॥६९॥

हरि चरचा से बैर संग वह त्यागिये ।
अपनी बुद्धि नसाय सबेरे भागिये ॥
सरबस वह जो देइ तो नाहीं काम का ।
अरे हाँ पलटू मित्र नहीं वह दुष्ट जो द्रोही राम का ॥७०॥

आसन दृढ़ ह्वै रहै जगत से हारना ।
निद्रा बसि में करै भूख को मारना ॥
काम क्रोध को मारि आपु को खोवना ।
अरे हाँ पलटू पाँव पसारे यार मौज से सोवना ॥७१॥

संत सोई ह्वै जाय संजम में जो रहै ।
गया आपु को भूलि खबर अब को कहै ॥
आगि के बीच पतंग बहुरि ना होन की ।
अरे हाँ पलटू परी सिंधु में जाय डेरी[1] जब लोन की ॥७२

माया औ बैराग दोऊ में बैर है ।
लिये कुल्हाड़ी हाथ मारता पैर है ॥
किया चहै बैराग मया में जायगा ।
अरे हाँ पलटू जो कोइ माहुर खाय सोई मरि जायगा ॥७३॥

लोक लाज जनि मानु बेद कुल कानि को ।
भली बुरी सिर धरो भजो भगवान को ॥
हँसिहै सब संसार तो माख[2] न मानिये ।
अरे हाँ पलटू भक्त जक्त से बैर चारो जुग जानिये ॥७४॥

देव पित्र दे छोड़ि जगत क्या करैगा ।
चला जा सूधी चाल रोइ सब मरैगा ॥
जाति बरन कुल खोइ करौ तुम भक्ति को ।
अरे हाँ पलटू कान लीजिये मूँदि हँसै दे जक्त को ॥७५॥

केतिक जुग गये बीति माला के फेरते ।
छाला परि गये जीभ राम के टेरते ॥
माला दीजे डारि मनै को फेरना ।
अरे हाँ पलटू मुँह के कहे न मिलै दिलै बिच हेरना ॥७६॥

तीरथ ब्रत में फिरे बहुत चित लाइ कै ।
जल पखान को पूजि मुए पछिताइ कै ॥

---

(१) डली । (२) अपमान ।

बस्तु न बूझी जाय अपाने हाथ में ।
अरे हाँ पलटू जो कुछ मिलै सो मिलै संत के हाथ में ॥७७॥

केतिक फिरैं उदास बनै बन धावते ।
केतिक साधैं जोग खाक सिर नावते ॥
केतिक कथनी कथैं केतिक आचार में ।
अरे हाँ पलटू कोउ न पावै पार बड़े दरबार में ॥७८॥

सुपना यह संसार लागता आइ कै ।
चले जुवा में हारि मनुष तन पाइ कै ॥
देखत सोना लगै सकल जग काँच है ।
अरे हाँ पलटू जीवन कहिये झूठ तो मरना साच है ॥७९॥

तीसो रोजा किया फिरे सब भटकि कै ।
आठो पहर निमाज मुए सिर पटकि कै ॥
मक्के में भी गये कब्र में खाक है ।
अरे हाँ पलटू एक नबी का नाम सदा वह पाक है ॥८०॥

ना बाम्हन ना सूद्र न सैयद सेख है ।
हम तुम कोऊ नाहिँ बोलता एक है ॥
दूजा कोऊ नाहिँ यही तहकीक है ।
अरे हाँ पलटू लाख बात की बात कहा हम ठीक है ॥८१॥

डाँड़ी पकरे ज्ञान छिमा कै सेर है ।
सुरत सबद से तौल मनै का फेर है ॥
भला बुरा इक भाव निबाहै ओर है ।
अरे हाँ पलटू सन्तोष की करै दुकान महाजन जोर है ॥८२॥

करामात सब झूठ बिस्वास को थापना ।
जैसे स्वान को हाड़ लोहू है आपना ॥

अनहद बाजै तूर सुन्न में धजा फरकै ।
मुवा होय सो जाय देखत कै जान सरकै ॥
अठएँ लोक के पार भरा इक हौज है ।
अरे हाँ पलटू मुदा हुआ तमाम करै फिर मौज है ॥६५॥

अर्ध उर्ध के बीच हिँडोला चंग[१] है ।
झूलै संत सुजान सजन से रंग है ॥
सुरत सब्द कै खेल सहर कै नाइबी ।
अरे हाँ पलटू अर्ध उर्ध के बीच बड़ी है साहिबी ॥६६॥

वार पार सब एक कोऊ ना आन है ।
वायू है दोउ एक पान आपान है ॥
जीव ब्रह्म के बीच परी इक साल है ।
अरे हाँ पलटू उहि गोकुल के घाट कन्हैयालाल है ॥६७॥

गगन महल के बीच अमी झरि लागिनी ।
टोपन चूवै बूँद पियै इक साँपिनी ॥
साँपिनि डारा मारि बूँद को पिया है ।
अरे हाँ पलटू अमर लोक गे हंस जुगो गुग जिया है ॥६८॥

अरध उरध के बीच बसा इक सहर है ।
बीच सहर में बाग बाग में लहर है ॥
मध्य अकास में छुटै फुहारा पवन का ।
अरे हाँ पलटू अंदर धँसि के देखु तमासा भवन का ॥६९॥

सुन्न समाधि के बीच ध्यान को लावना ।
सुखमनि के रे घाट पवन ले आवना ॥

(१) चगा, सुघर ।

टूटे ना वह डोरि बाट आरूढ़ है ।
अरे हाँ पलटू ऐसे को परनाम अवस्था गूढ़ है ॥१००॥

जगमग जोति जगाव झिरिहिरी बीच में ।
कमठ दृष्टि से मारि गिरौ जनि कीच में ॥
सोहं सोहं सब्द रैनि दिन बोलता ।
अरे हाँ पलटू जब देखो गरकाब पलक नहिँ खोलता ॥१०१॥

बिना जंतरी जंत्र बाजता गगन में ।
बिसरि गया संसार उसी के लगन में ॥
जो कोई जनमी होय हमारे लगन की ।
अरे हाँ पलटू सो प्यारी लै जानि बात यह सजन की ॥१०२॥

गाड़ि ज्ञान को बाँस सुरति की डोर है ।
चढ़ा खिलाड़ी धाय जगत में सोर है ॥
अमर लोक के बीच हरी इक दूब है ।
अरे हाँ पलटू हद अनहद के पार तमासा खूब है ॥१०३॥

आसिक चला सिकार बड़े दरियाव में ।
बड़का रोहू बझा परा जब दाव में ॥
बूड़े कितिक गँवार येही के कारने ।
अरे हाँ पलटू लगा हमारे हाथ कुंड के सामने ॥१०४॥

पच्छिउँ गंगा बहै पानी है जोर का ।
बीच मँहै इक कुंड मुरेरा तोर[1] का ॥
उलटी बहै बयार नाव मुरकाय दै ।
अरे हाँ पलटू उतरे येहि के पार तो सूधी जाय दै ॥१०५॥

(१) तोड़ ।

तिरबेनी के घाट नाव को आनि कै।
सुखमनि घाट थहाय चलावो जानि कै॥
असी संगम से बीच पहारी फोरि कै।
अरे हाँ पलटू गुन[१] को खैंचु सिताब काम है जोर कै॥१०६॥

जहाँ न जप तप नेम ज्ञान ना ध्यान है।
पानी पवन अकास नाहिँ ससि भान है॥
जोग जुक्ति ना सुरति नाहिँ दिन रात है।
अरे हाँ पलटू मन बुधि चित ना जाय तहाँ की बात है॥१०७॥

॥ दया ॥

माता बालक कँहै राखती प्रान है।
फनि मनि धरै उतारि ओही पर ध्यान है॥
माली रच्छा करै सीँचता पेड़ ज्योँ।
अरे हाँ पलटू भक्त संग भगवान गऊ औ बच्छ त्योँ॥१०८॥

साहिब के दरबार कमी किस बात की।
चूक चाकरी माहिँ परी दिन रात की॥
जल थल जीव चराचर की सुधि लेत है।
अरे हाँ पलटू कुसवारी[२] में कीटहिँ चारा देत है॥१०९॥

कौन सकस करि जाय नाहिँ कछु खबर है।
बीच में सब के देइ बड़ा वह जबर है॥
हरि धरि मेरो रूप करै सब काम है।
अरे हाँ पलटू बीच मँहै इक नाम मोर बदनाम है॥११०॥

॥ छमा ॥

भूखे औ पेट भरे दोस सब लावते।
बरषा सूखा पड़े दोउ बिधि गरियावते॥

(१) रस्सी जिसे मस्तूल में बाँध कर नाव को खींचते हैं। (२) टसर के कीड़े का घर बेर के पेड़ पर अपने मुह के लुआब से बना लेता है।

भली बुरी कोउ कहै बनत है सहे से ।
अरे हाँ पलटू बड़े भये भगवान छिमा के किहे से ॥१११॥

॥ संतोष ॥

अजगर ना ब्योपार करन कछु जात है ।
डोलै कै सक[1] नाहिं बैठे वह खात है ॥
खुसिहारी के किरिम मँहै किन्ह दिया है ।
अरे हाँ पलटू दोऊ से संतोष सोख हम लिया है ॥११२॥

॥ दीनता ॥

करम रहे दुइ लिखे पत्र एकै मँहै ।
महा पुरुष कै अंस दिया पापी कँहै ॥
भक्ती और को रही धोखे में मोहिं दिया ।
अरे हाँ पलटू आखिर बड़े की चूक दिया फिर ना लिया ॥११३॥

बनियाँ जाति मैं अधम बड़ा हौं पातकी ।
अधरम आठो गाँठि तनिक नहिं सातुकी ॥
दूसर पलटू रहा भक्ति ओहि कँह रही ।
अरे हाँ पलटू भूलि गया भगवान दिया मो कँह सही ॥११४॥

नवनि गरीबी दया भक्ति का मूल है ।
इतना गुन ना होय बास बिनु फूल है ॥
बड़ा भया किस काम करै हंकार है ।
अरे हाँ पलटू मीठ कूप जल पिवै समुंदर खार है ॥११५॥

॥ मन ॥

मन ना पकरा जाय बहादुर ज्वान है ।
करत रहै खुरखुंद[2] बड़ा सैतान है ॥
ऐसा यार हरीफ रहत मन हलक में ।
अरे हाँ पलटू उड़ता कोस हजार पच्छ[3] बिनु पलक में ॥११६॥

---

(१) ताक़त । (२) खुरचाल, बदमाशी । (३) पंख ।

काम क्रोध बसि किहा नींद अरु भूख को ।
लोभ मोह बसि किहा दुक्ख औ सुक्ख को ॥
पल में कोस हजार जाय यह डोलता ।
अरे हाँ पलटू वह ना लागा हाथ जौन यह बोलता ॥११७॥

नापै चारिउ खूँट थहावै समुँद को ।
सब परबत को तौलि गनै फिर बूँद को ॥
हारा सब संसार बात है फेर का ।
अरे हाँ पलटू वह नहिँ लागै हाथ जो चालिस सेर[1] का ॥११८॥

जानि बूझि के परै आप से भाड़ में ।
ता से काह बिसाय खुसी जो मार में ॥
पीटा गा बहु बार तनिक नहिँ डेरत है ।
अरे हाँ पलटू यह मन भया चमार चमारी करत है ॥११९॥

सहज कूप में परै सहज रन जूझना ।
सहजे सिंह सिकार अगिन कै कूदना ॥
कितनी करै हियाव बात सब गर्द है ।
अरे हाँ पलटू मन को राखै मार सिपाही मर्द है ॥१२०॥

॥ माया ॥

दिया जक्त बौराय माया कलवारिनी ।
द्रव्य लेइ बिष देइ पियावै बारुनी[2] ॥
इक्क तो लोटै धूरि चोख इक माँगता ।
अरे हाँ पलटू अमल नहीँ यह भूत धाय के लागता ॥१२१॥

॥ मान ॥

लोभ मोह को तजा तजा जग आस को ।
काम क्रोध को तजा भूख औ प्यास को ॥

(१) मन । (२) शराब ।

नंगा बन बन फिरै बसन ना तने में ।
अरे हाँ पलटू सबै बात गइ खोय बड़ाई मान में ॥१२२॥

॥ कनक कामिनी ॥

निकरे घर को त्यागि लराई करन को ।
चले खेत से भागि डेरे जब मरन को ॥
दूइ नंगी तलवार किहा तिन्ह गरद है ।
अरे हाँ पलटू कनक कामिनी सेती बचै सो मरद है ॥१२३॥

॥ मूर्खता ॥

हरि हीरा हरि नाम फेंकि तेहिं देत हैं ।
सिद्धाई है काँच तुच्छ को लेत हैं ॥
करामाति को देखि मूढ़ ललचात हैं ।
अरे हाँ पलटू इन बातन से संत बहुत अलसात हैं ॥१२४॥

लोभ मोह के बीच परा सब लोग है ।
काम क्रोध सुत नारि नरक का भोग है ॥
पीयत हैं बिष धाय अमृत करि जानते ।
अरे हाँ पलटू मने करै हित जानि बैर सब मानते ॥१२५॥

॥ दुर्मत ॥

दुरमति जेहि माँ बसै ज्ञान हर लेत है ।
तुरत करत है नास बड़ा दुख देत है ॥
तेज पूँज हर लेय बुद्धि बल भावना ।
अरे हाँ पलटू दुरमति बसे बिलाय गया है रावना ॥१२६॥

लाख खाय जो स्वान चाटने जायगा ।
तजि कै काग कपूर बिष्टा को खायगा ॥
तजै न चोरी चोर सहै बहु सासना ।
अरे हाँ पलटू छुटै न जीव की खोय लगी वह बासना ॥१२७॥

कौन करै यह न्याव दोऊ परमान है।
अरे हाँ पलटू नरक सरग की राह सदा अलगान है ॥१३९॥

औंधे बासन नीर सो पिंड सँवारिया।
गर्भ बीच दस मास मानुषा राखिया ॥
भूला कौल करार राम से भेद है।
अरे हाँ पलटू जेहि पतरी में खाय करै जग छेद है ॥१४०॥

सन्तन किया बियाह दुलहिनी ज्ञान की।
सतगुरु दिया कराय बेटी जजमान की ॥
तन माड़ो के बीच अजब इक चेहरा।
अरे हाँ पलटू मन दूलह रघुनाथ चढ़े सिर सेहरा ॥१४१॥

रहते रोजा नित्त साँझ कै मुरगी मारै।
आठो वक्त निमाज गाय की कुही निहारै ॥
सब में रहै खुदाय गले में छूरी देता।
अरे हाँ पलटू जाया चाहै भिस्त खून गरदन पर लेता ॥१४२॥

मुसलमान के जिबह हिन्दू के मारैं झटका।
खाइ दूनौं मुरदार फिरत हैं दुनिउँ भटका ॥
वै पूरब को जाहिं पछिम वै ताकते।
अरे हाँ पलटू महजिद देवल जाय दोऊ सिर मारते ॥१४३॥

करम बँधा संसार बँधावै आप से।
जमपुर बाँधा जाय करम की फाँस से ॥
कोई न सकै छुड़ाय रसा यह मोट है।
अरे हाँ पलटू संतन डारा काटि, नाम की ओट से ॥१४४॥

अफर फरावैं गाछ, रैनि को दिन करैं।
बाँझिन बेटा देंइ, बेद गूँगा पढ़ैं ॥

पाहन जल उतराय, दरस पापी तरैं ।
अरे हाँ पलटू लिखा कर्म को मेटि, संत जन फिर गढ़ैं ॥१४५॥

बाँधे बनिया हाट, नहीं है लावना ।
इसक बिना का राग, बनै नहिं गावना ॥
मन मानै सो करै, बात यह चौज की ।
अरे हाँ पलटू कहे सुने से नाहिं, फकीरी सौक की ॥१४६॥

निकरे जग से तोरि, भया मन त्याग में ।
मारग पकरिन कठिन, धसे बैराग में ॥
माया आगे मिली, रहे ललचाय कै ।
अरे हाँ पलटू धसे जक्त में, फेर महंती पाय कै ॥१४७॥

॥ ककहरा १४८–१८० ॥

कक्का केती कही समुझाय कहा कोई नहिं मानै ।
खारी और कपूर दोऊ एकै में सानै ॥
कंचन घुँघची आनि तुला एकै में तौलै ।
अरे हाँ पलटू झूठा मारै गाल, साच कैसे कै बोलै ॥१॥

खख्खा खरा बनावै खोट खोट को खरा बनावै ।
चोर चौतरे बैठि साह को पकरि मँगावै ॥
काम क्रोध नहिं मरै गुरू औ सिष्य अनारी ।
अरे हाँ पलटू हमरा तत्त बिचार, कहौ को सुनै हमारी ॥२॥

गग्गा गाली पावैं संत सिद्ध की करैं बड़ाई ।
सूद्र कलंदर द्रब्य सिद्ध से माँगन जाई ॥
अंधे ऐना हाथ कहौ कैसे कै सूझै ।
अरे हाँ पलटू हमरा तत्त बिचार, बचन कोई नहिं बूझै ॥३॥

तपसी भे धनवंत सावे[1] सब भये भिखारी ।
अरे हाँ पलटू रोगी ह्वै गये नीक, बैद सब भये अजारी[2] ॥१५॥

दद्दा दबकि रहा है स्यार सिंह का पहिरे बाना ।
दाग दगाये सीस लड़न का मरम न जाना ॥
हाकिम रहे छिपाय भेद पाया नहिँ कोई ।
अरे हाँ पलटू तक तक रहिये ताक, कहै सो दुसमन होई ॥१६॥

धध्धा धनी कहावैँ बड़े पूँजी घर में नहिँ इक किन ।
बैठे करत गुमान रैनि दिन जात भजन बिन ॥
चौड़ी लाय दुकान करैँ पकवानहिँ फीका ।
अरे हाँ पलटू जानै खावनहार, और नहिँ स्वाद उसी का ॥१७॥

पप्पा पड़े पतंगा जाय आप से दीपक माहीँ ।
तन को दिया जराय सोच दीपक को नाहीँ ॥
पहिले तो दीपक जरै पाछे जरै पतंग ।
अरे हाँ पलटू हरि हरि जन से प्रीति करि, मिलि दोऊ इक अंग ॥१८॥

फफ्फा फाका फकर जरूर फरक आलम से रहिये ।
भली बुरी कहि जाय बात दो सबकी सहिये ॥
कहर मेहर की नजर लगन साहिब से लावै ।
अरे हाँ पलटू लगी रहै वह डोरि, छुटै तो गोता खावै ॥१९॥

बब्बा बगुला कीन्हे भेष हंस की बोली बोलै ।
नीर छीर दोउ महे आप से परदा खोलै ॥
राँगा रूपा सेत नजर बिन को अलगावै ।
अरे हाँ पलटू जहवाँ नाहिँ हंस तहाँ बगु हंस कहावै ॥२०॥

---

(१) साह । (२) रोगी ।

भभ्भा भरमन ही को खै[1] करै इंद्रिन से निगरा[2] ।
नाम से रहै भुलाय चित्त दै करते सिगरा[3] ॥
निगरा सिगरा नाहिँ जोई है जाग्रत जोगी ।
अरे हाँ पलटू निगरा सिगरा आहिँ, कहो कोइ रोगी भोगी ॥२१॥

मम्मा मन मुरीद होइ नाहिँ आपु वै पीर कहावैँ ।
बिना बंदगी फैज कहो कोइ कैसे पावै ॥
कितनौ नाचौ नाच नाक बिन नकटी बाई ।
अरे हाँ पलटू सतगुरू होहिँ दयाल, देहिँ तो मिलै बड़ाई ॥२२॥

रर्रा राँड भराये माँग नैन भरि काजर लाये ।
बिना खसम की सेज कहा भा फूल बिछाये ॥
तन पर लत्ता नाहिँ ओढ़ाती खसमहिँ सोई ।
अरे हाँ पलटू बिना भजन की राँड, कहो कितना तन धोई ॥२३॥

लल्ला लालच बुरी बलाय यही सब बात बिगारी ।
लालच जेहि का नाम माया की है महतारी ॥
कनिक कामिनी रूप धरे सुर नर मुनि लूटै ।
अरे हाँ पलटू ऐसा कोई ना मिला, जो इन से छूटै ॥२४॥

वव्वा वारूँ तन मन सीस उसी का कहूँ सँदेसा ।
हित अपना पहिचान सुनत ही मिटै कलेसा ॥
पूरन प्रगटे भाग मिले वहि देस के साईँ ।
अरे हाँ पलटू करिये उन से प्रीत, नहीँ उनसे अधिकाई ॥२५॥

सस्सा सरवर[4] करते स्यार सिंह से रार बढ़ावै ।
काग कहै हम बड़े हंस से गाल बजावै ॥
भूँकन लागे स्वान संत सुनि कान को मूँदा ।
अरे हाँ पलटू आखिर बड़े सो बड़े, दिन चार का धींगम धूँगा ॥२६

(१) क्षय या नाश । (२) निग्रः या रोक । (३) संग्रह या मेल । (४) बराबरी ।

सुक्ख में मगन औ दुख में दिलगीरी आवै,
मरत है बड़ाई को छोटाई की अचाहना।
अस्तुति में फूलै औ क्रोध करै निन्दा सुनि,
मित्र सेती भाव करै दुष्ट से अभावना॥
संपति में खुसी औ बिपति बिलाप बड़ा,
पूजे में कष्ट है पुजावने की कामना।
पलटूदास चिन्ता ज्यों चरत है सरीर कँहै,
बिगरी फकीरी बेकूफी से ना बना॥३॥

राजा युधिष्ठिर ने जा दिना कराई यज्ञ,
सुर नर मुनि द्विज सब को बुलाई है।
बड़े बड़े तपसी ऋषेसुर सनकादि आये,
स्री किसन सहित भोजन सब को कराई है॥
बाजी ना पंचायन संख सबै सिर नीचे किहो,
ऐसी भरी सभा में लज्जा सब को आई है।
पलटूदास स्वपच ने उठाई है ग्रास जब,
जेती सीत खाई तेती बेर उन बजाई है॥४॥

बज्यो जब डंक तब छुटेउ गढ़ लंक,
चढ़ेउ भगवंत तिहुँ लोक जाना।
पवन का घोर लै गगन में छोर,
रिपु कटक बल भोर छुटे ज्ञान बाना॥
खुसी तैं तीस[१] जब कटे भुज बीस,
धरि मारु दस सीस मन राउ राना॥
भीखन दास करि सुन्न में बास,
तब सत्त की सीता लै अवध आना।

(१) तैंतिस कोटि देवता।

भयौ जब राज लै प्रेम समाज,
पलटू दास सुजान आनंद माना ॥५॥

नये नये कलसन में बाम्हन जल भरत रोज,
नये नये बासन में भोजन बनाई है।
दाल चावल बीनि बीनि करते अमनिया हम,
छत्तिस ब्यंजन षट रस भली भाँति से बनाई है॥
सोने के थार में परोसि के हम आगे धरे,
एक सीत अपने हाथ कबहूँ ना पाई है।
पलटूदास ऊँच छोड़ि नीचन से रीझि रहे,
सबरी की जूठी बेर माँगि माँगि खाई है॥६॥

नहाते त्रिकाल रोज पण्डित अचारी बड़े,
सदा पट[1] बसतर, सूत अंग ना लगाई है।
पूजा नैबेद आरती करते हम बिधि बिधान,
चंदन औ तुलसी भली भाँति से चढ़ाई है॥
हारे हम कुलीन सब कोटि कोटि कै उपाय,
कैसे तुम ठाकुर हम सपनेहू न पाई है।
पलटूदास देखौ यह रीझ मेरे साहिब की,
गये हैं कहाँ जब रैदास ने बुलाई है॥७॥

---

(१) रेशमी।

सवैया

छिन में बहुत हरि तरँग उठै,
छिन में धन खोजत लोग लुगाई।
छिन में बहु जोग बैराग कथै,
छिन काम किरोध को मारन धाई॥
छिन में बहु भोग बिलास करै,
छिन में उठि धाय करै कुटिलाई।
पलटू कपटी मन चोट करै,
हम भागि बचे गुरु की सरनाई॥१॥

चोर चंडाल चमार कहै,
और कोऊ कहै हरिदास है भाई।
कोऊ कहै यह तो नारि लुभानो,
कोऊ कहै माया रति आई॥
निंद करै ता से निंद करैये,
अस्तुति को न मनावन जाई।
जो हम हैं हरि जानत हैं,
अब रैन दिवस उनको गुन गाई॥२॥

॥ इति ॥

हिन्दी पुस्तक माला का सूचीपत्र

काव्य-निर्णय	१॥)
अयोध्या काण्ड	२)
आरण्य काण्ड	१)
सुन्दर काण्ड	१)
उत्तर काण्ड	१)
गुटका रामायण सजिल्द	॥।)
तुलसी ग्रन्थावली	६)
श्रीमद् भागवत	॥।)
सचित्र हिन्दी महाभारत	५)
विनय पत्रिका	६)
विनय कोश	४)
फ्रान्स की राज्य क्रान्ति का इतिहास	।=)
कवित्त रामायण	।=)
हनूमान बाहुक	—)॥
सिद्धि	॥)
प्रेम परिणाम	॥)
सावित्री और गायत्री	॥।)
कर्मफल	॥।)
महारानी शशिप्रभा देवी	१।)
द्रौपदी	॥।)
नल-दमयन्ती	॥।)
भारत के वीर पुरुष	२)
प्रेम-तपस्या	॥)
करुणादेवी	॥।)
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा (सचित्र)	॥)
संदेह (सजिल्द)	१।)
नरेन्द्र भूषण	१)
युद्ध की कहानियाँ	।=)
गल्प पुष्पाञ्जलि	॥।)
दुख का मीठा फल	१)
नव कुसुम (प्रथम भाग)	॥।)
„ (द्वितीय „)	॥।)

नाट्य पुस्तकमाला—

पृथ्वीराज चौहान	१)
समाज चित्र	॥।)
भक्त प्रह्लाद	॥)

बाल पुस्तकमाला—

सचित्र बाल शिक्षा	(प्र० भा०)	।)
„ „	(द्वि० „)	।=)
„ „	(तृ० „)	॥)
दो वीर बालक		॥)
घोंघा गुरु की कथा		।)
बाल विहार (सचित्र)		=)
हिन्दी कवितावली		=)
„ साहित्य प्रदीप		॥)
सती सीता		॥)
स्वदेश गान	(प्र० भा०)	—)
„	(द्वि० „)	—)
„	(तृ० „)	—)

चित्र माला—

प्रथम	भाग	॥।)
द्वितीय	„	॥।)
तृतीय	„	१)
चतुर्थ	„	१)
चारों भाग एक साथ लेने से		२॥)

कथा साहित्य

उलझी लड़ियाँ	(कहानी संग्रह)	१॥)
प्रवाह	(उपन्यास)	२॥)
चक्षु-दान	„	१॥)